बोरी का पुल

सुरेखा पाणंदीकर

चित्रांकन
शशि शेट्ये

₹ 25.00

NBT INDIA
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 812372456-5
12130961

बोरी का पुल

नेहरू बाल पुस्तकालय

बोरी का पुल

लेखन एवं अनुवाद

सुरेखा पाणंदीकर

चित्रांकन

शशि शेट्ये

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 978-81-237-3456-9

पहला संस्करण : 2001
छठी आवृत्ति : 2012 (*शक* 1934)

The Bridge at Borim *(English Original)*
Bori Ka Pool (Hindi)

₹ 25.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित

क्रम
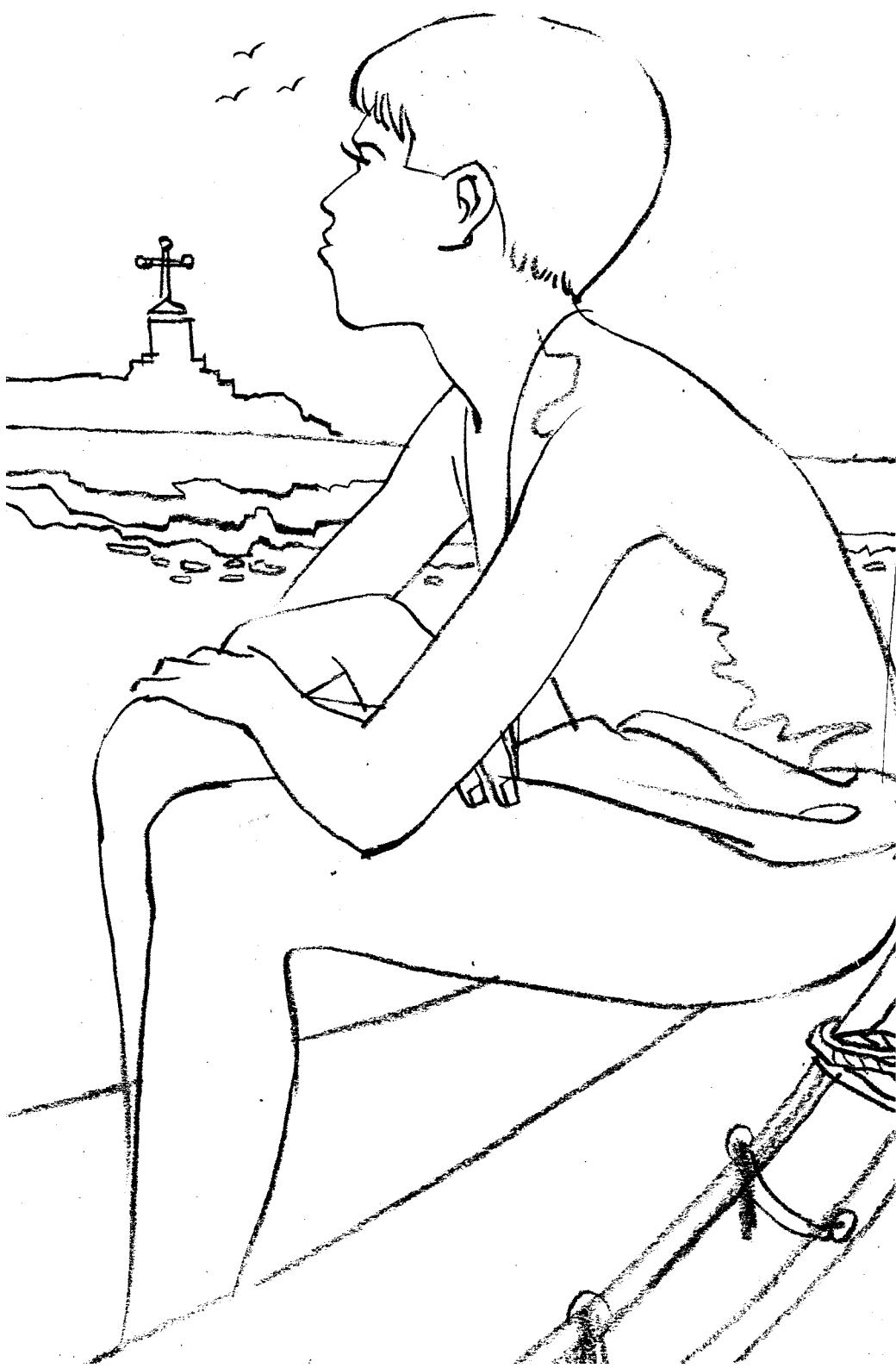
उसका खजाना

आखिर तुम्हें पकड़ ही लिया," जोज़े चिल्लाया। वह सीपी को तोड़ने ही गा था कि "नाका, नाका, तोड़ू नाका (नहीं, नहीं, तोड़ना नहीं)," कहता आ एक लंबा-सा आदमी उसके पास आया। वह इतना लंबा था कि उसे खते-देखते जोज़े की गरदन अकड़ने लगी। लंबा आदमी हंसकर बोला, "छोटे स्त, सीपी को तोड़ो नहीं। यह छोटे से केकड़े का घर है। देखो, कितना दर है।" जोज़े ने देखा, सचमुच सुंदर था। लंबे आदमी ने और भी कई पियां उसे दिखाईं जो उसने सुबह जमा की थीं। उसने उन सीपियों का सा वर्णन किया मानो वे सब जीवित प्राणी हों। उसकी जानकारी से जोज़े हुत प्रभावित हुआ।

"मैं सीपियां इकट्ठी करने में आपकी मदद करूंगा। मैं रोज यहां आता । पर क्या आप इनके बारे में और कुछ बतायेंगे ?" जोज़े ने पूछा।

"क्यों नहीं, छोटे दोस्त। पर मैं यहां ज्यादा दिन नहीं रहूंगा। एक प्ते के बाद चला जाऊंगा। पर तुम इन्हें इकट्ठा करते रहो।" वह आदमी ला। उस सुबह साहिबा से मिलने के बाद जोज़े के जीवन का रुख ही दल गया।

साहिबा (लंबे आदमी का जोज़े द्वारा दिया नाम) के साथ बिताई वे बहें जोज़े की जिंदगी की सबसे सुहानी सुबहें थीं। वे सागर किनारे घूमते। थले पानी में चलकर शंख और सीपियां चुनते। साहिबा ने ही उसे चट्टानों बीच सागर के पानी से बनी छोटी-छोटी तलैया दिखाईं जिनमें रंगबिरंगी

उस सुबह साहिबा से मिलने के बाद जोज़े के जीवन का रुख ही बदल गया

मछलियां और सीपियां थीं। वे मछलियों, केकड़ों आदि को घंटों देखते रहते थे।

और फिर वह दिन आया जब साहिबा ने उससे विदा ली। जोज़े आंसू रोक न सका। साहिबा ने उसे समझाया कि उसका सागरी खजाना देखने वह जरूर आयेगा। उसने जोज़े को 'डॉग व्हाक' का शंख भी खजाने का श्रीगणेश करने के लिए दिया।

जोज़े समुद्री दौलत को खोजने प्रतिदिन समुद्र के किनारे आता। हर सुबह-शाम वह समुद्र तट पर टहलता और उसकी पैनी निगाहें सुंदर शंख, सीपियां, पंख और रंगबिरंगे छल्लों को खोज लेती थीं। उनको खोजने, साफ करने और हिफाजत से अपने गुप्त खजाने में रखने में समय कैसे बीत जाता, पता ही नहीं चलता।

उसका खजाना-घर था सागर तट पर काफी दूर पड़ी हुई एक पुरानी नाव। वह अपना सारा खजाना उसमें रखता था। उसे विश्वास था कि घर ले जाने पर उसकी माई (मां) उन्हें फेंक देगी। जोज़े की मां मारिया को अपनी छोटी-सी झोपड़ी की सफाई का बहुत ध्यान रहता था। जो भी चीज उसे लगता कि गंदगी फैलायेगी, वह उसे उठाकर फेंक देती थी।

एक दिन जोज़े सागर किनारे जल्दी आ गया। उसे वहां शाम को प्राप्त हुई तारा मछली देखनी थी। वह उसे चट्टान की दरार में मिली थी। वह दौड़कर नाव में चढ़ा और उस पर रखा लकड़ी का पटरा हटाया। देखा कि उसकी तारा मछली शंख-सीपियों के मध्य में चमक रही थी। उसने अपने संग्रह की तरफ गर्व से देखा। उसमें कई शंख-सीपियां थीं। छोटी-बड़ी, गहरी-उथली, हाथी दांत जैसी सफेद, और गुलाबी। किसी पर काली धारियां थीं। कुछ उसने सागर तट से चुनी थीं और कई उसे रेत में दबी पड़ी मिली थीं।

उसने अनुभव किया कि एक शंख उसकी तरफ आंखें मिचका रहा था। उसने उसे उठाया। उसके अंदर छोटा-सा जीव था, शायद छोटा केकड़ा था। यह शंख उसे बहुत पसंद था। दूसरा शंख जो उसे भाता था वह था 'डॉग व्हाक'। उसका टेढ़ा-मेढ़ा आकार कुत्ते के दांत दिखाते खुले मुंह की

तरह लगता था। जब भी वह 'डॉक व्हाक' देखता उसे साहिबा की याद आती। उसने शंख को उठाकर कानों से लगाया। उससे सागर की लहरों की आवाज आयी।

वह सुनने में इतना मगन हो गया कि उसे अपनी मां की आवाज भी सुनाई नहीं दी। "जोज़े, जोज़े, कहां है तू ? हे भगवान, कहां और कैसे खोजूं इस पागल लड़के को ?"

उसे अचानक धक्का लगा। जिसमें वह अपना खजाना देख रहा था, कोई उसकी नाव के नीचे था और कुछ खोज रहा था। जोज़े झट से नीचे बैठा और अपने खजाने को ढंकने के विचार से उस पर लेट गया।

"मारिया, यहां नहीं है वह," उसने फ्रांसिस की आवाज सुनी।

जोज़े चुपचाप सांस रोके लेटा रहा ताकि वह पकड़ा न जाये।

कुछ देर बाद जब उसे विश्वास हो गया कि फ्रांसिस और बाकी सब चले गये हैं, उसने खजाना लकड़ी के तख्ते से ढंक दिया। फ्रांसिस, फलेरो, मारिया, जूली और अन्य जहां मछुआरों के लौटने की राह देख रहे थे, वह भी वहां पहुंचा और चुपके से उनमें जाकर खड़ा हो गया। पर मारिया ने देख ही लिया और गुस्से से पूछा, "कहां था रे अब तक ?"

"यहीं किनारे पर तो था," जोज़े बोला।

इससे पहले कि मारिया कुछ और पूछती "आईलो, आईलो" (आ गयी, आ गयी, नावें आ गयीं) का शोर हुआ। सब मछलियों को उतारने में लग गये। और फिर 'ठहर, अरे, जरा ठीक से पकड़" के शोर के साथ रोज़ की तरह काम शुरू हुआ। आधा घंटा छोटे-बड़े सब को जाल में से मछलियां निकालने में लगा। औरतें मछलियों को चुन कर टोकरियों में सजाने लगीं।

जोज़े अपने मां-बाप की मदद करने लगा। कुछ मछलियां अभी भी जिंदा थीं। वे छूटने के लिए तड़प रही थीं। जोज़े को बड़ा खराब लगता जब उन चंदेरी जीवों को पकड़ कर टोकरियों में बंद किया जाता।

"पैड्रो, कौन-सी मछली मिली ? बांगड़ा, सुरमई या बड़ी तलवार मछली ?" फ्रांसिस ने पूछा।

वह सुनने में इतना मगन हो गया कि उसे अपनी मां की आवाज भी सुनाई नहीं दी

“नहीं दोस्त, कुल तीन बड़ी मछलियां मिलीं। बाकी सब छोटी ही हैं,” पैड्रो ने बताया।

“चलो मारिया, जल्दी चलो। अगर हम बाजार में जल्दी नहीं पहुंचे तो साथ के गांव की औरतें सब पैसे वाले ग्राहक हड़प लेंगी।”

जैसे ही औरतें टोकरियां सिर पर धरने लगीं, शोरगुल और बढ़ा। उन्हें बाजार पहुंचने की जल्दी जो थी ! मारिया भी सिर पर टोकरी रखकर बाजार की तरफ चलने लगी। जोज़े उसके पीछे हो लिया।

समुद्र तट की घटना

रविवार की एक सुबह जोज़े हमेशा की तरह समुद्र तट पर खजाने के लिए शंख-सीपियां खोजने आया था। लेकिन तट पर स्कूली बच्चों का शोरगुल था। जोज़े शंख-सीपियां भूल गया। वह स्कूली कपड़ों में सजे बच्चों को देखने लगा। उनके पास खाने के डिब्बे और पानी की रंगबिरंगी बोतलें थीं।

कुछ बच्चे गा रहे थे तो कुछ रबड़ की एक बड़ी गेंद से खेल रहे थे। तभी एकदम से एक लड़के का ध्यान गाने वाले बच्चों को देख रहे जोज़े की तरफ गया जो सिर्फ लंगोटी पहने था। उसने अन्य लड़कों को आवाज दी।

“गोपू, उस ‘नंगू’ लड़के को देख। उसे शरम भी नहीं आ रही है।” सुभाष ने कहा। उसी ने जोज़े को पहले देखा था।

“नंगू पंगू, शेम शेम,” वे चिल्लाये और हंसने लगे।

जोज़े का ध्यान उसकी तरफ गया। उसने उनकी तरफ देखा तो बच्चों ने उसकी तरफ देखते हुए मुंह बनाये। जोज़े को बुरा लगा। उसने मुंह फेरा और गाने वाले बच्चों को देखने लगा।

“क्या समझता है अपने को ?” सुभाष बोला।

“हमें कुछ समझता ही नहीं,” राजू चिल्लाया।

“उसे सबक सिखाते हैं,” अशोक बोला।

“हां हां, उसे सबक सिखाना ही पड़ेगा,” सब कह उठे।

सुभाष ने गोपू को जोज़े को गेंद मारने का इशारा किया। जोज़े को गेंद नहीं लगी पर वह उसके पास जा गिरी। जोज़े ने गेंद उठाई और उसे

वापस करने लड़कों के पास गया। वे उस पर हंसे और चिल्लाये, ''नंगू पंगू, शेम शेम।''

गोपू ने उससे गेंद छीनकर उसे धक्का दे दिया। जोज़े लड़खड़ाया और गिर पड़ा। लड़के जोर से हंसे। जोज़े बहुत दुखी हुआ। वह वहां से भागा और समुद्र तट पर कुछ दूर पड़ी नाव पर जा बैठा।

अचानक उसे लड़कों की आवाज सुनाई दी, ''बचाओ बचाओ !'' वह उनकी तरफ भागा। उसने देखा कि जिस लड़के ने उससे गेंद छीनी थी वह पैर के नीचे से रेत खिसकने की वजह से गहरे समुद्र की तरफ बहा जा रहा था। वह बह रहा था और बाकी लड़के मदद करने के बजाय डर से चिल्ला रहे थे और रो रहे थे—''गोपू डूब रहा है, गोपू डूब रहा है, दीदी, दीदी।''

''वह जो बड़ी लहर आ रही है, वह उसे जरूर बहा ले जायेगी,'' जोज़े ने सोचा। उसे समुद्र से कभी डर नहीं लगा। उसने फौरन समुद्र में छलांग लगाई और गोपू को कसकर पकड़ लिया। उसे पकड़कर वह लहरों पर तैरता रहा। जब लहरें कुछ कम हुई तो गोपू को किनारे की तरफ खींचने लगा। जोज़े को लहरों की पूरी जानकारी थी। बड़ी उछलती लहरों से गोपू को बचाकर वह किनारे पर ले आया। उस समय तक शिक्षिका श्यामा दीदी और अन्य लोग वहां जमा हो गये थे। दीदी ने गोपू को संभाला। भीड़ से एक आदमी आगे आया। उसने गोपू को पेट के बल लिटाया और उसकी पीठ दबाई। गोपू को खांसी आयी और उसके मुंह से ढेर सारा पानी निकला।

''अब खतरा टल गया। इसे तौलिए से पोंछिए,'' आदमी ने सुझाया। दीदी ने अन्य शिक्षकों को गोपू को तौलिए से पोंछने के लिए कहा।

''भगवान की कृपा है !'' दीदी बोलीं और सबने राहत की सांस ली। अब दीदी ने कहा, ''सोचो, अगर आज उस बच्चे ने गोपू को न बचाया होता तो क्या होता ?'' सबके रोंगटे खड़े हो गये। ''पर वह गया कहां ?'' दीदी ने चारों तरफ देखते हुए पूछा।

तभी जाता हुआ जोज़े दिखाई दे गया।

''रुको, छोटे हीरो ! जरा रुको,'' दीदी ने पुकारा और उसके पीछे भागीं।

जोज़े गोपू को बचाकर किनारे पर ले आया

"यहां आओ बेटा ! हमें धन्यवाद तो करने दो।"

दीदी जोज़े का हाथ पकड़कर उसे अन्य बच्चों के पास लायीं। गोपू वहीं पर लेटा था। जोज़े का हाथ अपने हाथों में लेकर वह बोलीं, "बहुत धन्यवाद, छोटू ! सचमुच, तुम बहादुर लड़के हो। आज तुमने केवल गोपू को नहीं बल्कि हम सबको दुखद घटना से बचाया है।" उन्होंने जोज़े को गले से लगाया और पूछा—

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"जोज़े," धीमी आवाज में जोज़े ने बताया।

"जोज़े, बहुत अच्छा नाम है। अच्छे और वीर बालक का अच्छा नाम।"

"कहां रहते हो ?" दीदी ने जानना चाहा।

"वहां चर्च के पास उन झुग्गियों में," जोज़े ने इशारे से दिखाया।

"कौन से स्कूल में पढ़ते हो जोज़े ?" छोटी लड़की उषा ने पूछा।

"नहीं, मैं किसी स्कूल में नहीं पढ़ता," जोज़े बोला।

"क्यों नहीं ? क्या स्कूल में पढ़ना अच्छा नहीं लगता ?" उषा ने फिर पूछा।

"नहीं, स्कूल में पढ़ना अच्छा लगता है, पर मेरे माई (मां) और पाई (पिताजी) के पास मुझे सुमी और उसके भाई की तरह मडगांव के बड़े और सुंदर स्कूल में पढ़ाने के लिए पैसे नहीं हैं," जोज़े ने उदास स्वर में कहा।

"मडगांव जाने की क्या जरूरत है ? यहां बाणावली में ही हमारा स्कूल है। ये सारे बच्चे यहां इसी स्कूल में पढ़ते हैं। मैं इन्हें पढ़ाती हूं। क्या तुम हमारे स्कूल में आना चाहोगे ?" श्यामा दीदी ने पूछा।

"सच ! आप मुझे स्कूल में लेंगी ?" जोज़े ने उत्साहित होकर पूछा। "पर नहीं। मेरे पाई (पिताजी) नहीं मानेंगे। जोज़े फिर बोला, "मेरे पाई के पास फीस देने के लिए पैसे नहीं हैं। मेरे पास इन बच्चों जैसे अच्छे कपड़े भी नहीं है। न ही किताब है न स्लेट," जोज़े उदासी से बोला। वह बहुत निराश था।

"उसकी फिक्र मत करो। अगर तुम आना चाहते हो तो मैं सारा इंतजाम कर दूंगी। तुम्हारे पाई से अनुमति भी ले लूंगी। चलो जोज़े, तुम्हारे पाई के पास ताकि उनकी मंजूरी ले लें। फिर तुम गोपू, जिसे तुमने बचाया और

इन बच्चों के साथ पढ़ सकोगे, खेल सकोगे," उठते हुए श्यामा दीदी बोलीं।

"नहीं नहीं, इन लड़कों के साथ नहीं। मैं न ही इन लड़कों के साथ पढ़ूंगा, न खेलूंगा," अपना हाथ दीदी के हाथ से छुड़ाने का प्रयास करते हुए जोज़े बोला।

"क्यों नहीं ? क्या तुम्हें ये अच्छे नहीं लगते ?" दीदी ने पूछा।

"नहीं। मुझे नहीं अच्छे लगते। इन्होंने मुझे चिढ़ाया। मुझे 'नंगू पंगू' कहा। मैं जब गेंद वापस करने गया तो मेरे हाथ से छीन ली। मुझे धक्का भी दिया और गालियां भी। नहीं, मैं नहीं पढ़ूंगा इनके साथ," कहते हुए जोज़े का गला भर आया।

"क्या यह सच है सुभाष ?" लड़कों की तरफ मुड़कर दीदी ने पूछा। लड़कों ने शर्म से सिर झुका लिए।

जब सुभाष चुप रहा तो दीदी ने ऊंची आवाज में कहा, "मैं तुमसे पूछ रही हूं, सुभाष। क्या यह सच है ?" सुभाष ने हां में गरदन हिलाई।

"कितने खराब हो तुम लोग। शर्म आनी चाहिए तुम्हें। कितना अच्छा और निडर बच्चा है जोज़े। इसने तुम्हारे भाई गोपू की जान बचाई, हालांकि गोपू ने गेंद छीनकर इसे धक्का दिया था। तुमने इसे चिढ़ाया और इसके साथ बुरा सुलूक किया। चलो, माफी मांगो इससे और अपने स्कूल में आने के लिए कहो," दीदी ने सुभाष से कहा।

"हां-हां, जैसा दीदी कहती हैं वैसा करो।" बाकी बच्चे बोले।

"आओ लड़को, सभी माफी मांगो।" अन्य अध्यापकों ने भी कहा। सुभाष, राजू, माधव, दीपक, अशोक जोज़े के पास गये और बोले, "हमें माफ कर दो जोज़े। हमारे स्कूल में पढ़ने आओ। हम अब कभी तुम्हें नहीं चिढ़ायेंगे। हम तुमसे खेलेंगे।"

"आओ न जोज़े हमारे स्कूल में," छोटी दीपा ने कहा।

"जोज़े, हमारे स्कूल में आओ। जोज़े आओ, जोज़े आओ।" सब एक साथ बोलने लगे।

गोपू, जिसे पता लग गया था कि जोज़े ने उसे बचाया है, किसी तरह खड़ा हुआ। उसे चक्कर आ रहे थे, फिर भी आहिस्ता-आहिस्ता वह जोज़े के पास चलकर गया। उसके हाथ अपने हाथों में लेकर बोला, "जोज़े, पता

लड़कों ने शर्म से सिर झुका लिए

नहीं कैसे और किस मुंह से तुम्हारा धन्यवाद करूं। सचमुच, मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूं। मुझे मेरी बदतमीजी के लिए माफ कर दो। हमारे स्कूल में आ जाओ जोज़े।''

''मैं तो बहुत चाहता हूं, पर पता नहीं मेरे माता-पिता मानेंगे कि नहीं।''

जोज़े हिचकिचा रहा था क्योंकि उसे पता था कि उसके माता-पिता के पास पैसे नहीं हैं। दूसरी बात, उसके आस-पड़ोस में कोई भी कभी स्कूल नहीं गया था। लड़के बचपन में खेलते थे और मछलियां अलग करने में मदद करते थे। जब नाव में जाने लायक बड़े होते तो पिता के साथ समुद्र में मछली पकड़ने जाते थे। लड़कियां घर का कामकाज सीखतीं और मां के साथ मछली बेचने बाजार जातीं। 'ऐसे में कैसे स्कूल जा सकता हूं मैं ?' जोज़े सोच रहा था। पर जब दीदी ने कहा कि चलो, तुम्हारे पाई और माई के पास उनकी अनुमति लेने चलें, तब जोज़े के पास कोई चारा ही नहीं रहा। वह उन्हें अपने माता-पिता के पास ले गया जो उस दिन पकड़कर लाई हुई मछलियों को अलग-अलग करने में लगे हुए थे।

इच्छा-पूर्ति

जोज़े के माता-पिता ने लड़कों की फौज को जोज़े के साथ आते हुए देखा तो वे चौंक गये। "हे जीसस ! क्या किया हमारे जोज़े ने ?" अपनी छाती पर हाथ रखते हुए मारिया बोली। दोनों ने सोचा कि जोज़े ने जरूर कोई गलती की है और बच्चे उसकी शिकायत करने आ रहे हैं। "क्या किया जोज़े तुमने ? ये यहां क्यों आये हैं ?" बच्चों के आते ही मारिया ने पूछा। "हे जीसस ! कितनी बार तुमको कह चुकी हूं कि स्कूल से दूर रहो।" जोज़े को झकझोर कर मारिया बोली।

"जरा सुनिये। जोज़े ने कुछ गलती नहीं की है," दीदी बोलीं।

"फिर आप सब यहां क्यों आये हैं ? मैं जानती हूं अपने बच्चे को। हमेशा स्कूल के सपनें देखता स्कूल के पास खड़ा रहता है। और स्कूल की किताबों को भी पढ़ने के सपने देखता है। हे भगवान, क्या करूं !" मारिया बोलती ही जा रही थी।

"क्या तुम चुप रहोगी ?" जोज़े के पिताजी पेड्रो चिल्लाये। "उसकी तरफ ध्यान मत दीजिये। और बताइये कि आप लोग क्यों आये हैं यहां ?" पेड्रो ने विनम्र स्वर में कहा।

"आपका नन्हा बेटा बड़ा बहादुर है। आप दोनों ने इसे बड़ी अच्छी तरह से पाला-पोसा है। आज उसने गोपू, जिसने इसके साथ बदतमीजी की थी, उसे बचाया है," दीदी ने बताया।

"बहुत अच्छा। पर बचाने के लिए इसने किया क्या ? कैसे बचाया ?" पेड्रो जानना चाहते थे।

"मुझे ठीक से पता नहीं। जोज़े ही बतायेगा। बोलो जोज़े," दीदी ने कहा।

जब जोज़े कुछ नहीं बोला तो सुभाष आगे आया।

"हम लोग गेंद से खेल रहे थे। राजू ने गेंद गोपू की तरफ फेंकी। गोपू पकड़ नहीं पाया और गेंद समुद्र में जा गिरी।

"राजू ने गोपू से गेंद लाने को कहा। गोपू ने मना किया। वाद-विवाद हुआ। तब तक गेंद समुद्र में दूर जा चुकी थी। गोपू को गुस्सा आया और वह पानी में दौड़ पड़ा। लपककर गेंद पकड़नी चाही, पर एक ऐसी लहर आई कि गोपू गिर पड़ा।

"हम सब डर गये। हम में से कोई भी तैरना नहीं जानता था। हम सब चिल्लाने लगे। तभी हमने देखा कि जोज़े ने पानी में छलांग लगाई और जल्दी-जल्दी तैरकर गोपू को पकड़ लिया," सुभाष ने घटना का पूरा विवरण कह डाला।

"फिर ?" मारिया ने पूछा।

"अब आगे तुम ही बताओ जोज़े," सुभाष बोला।

"बताओ चेडो (बच्चे)," पेड्रो ने पुचकारा।

"जैसे ही मैंने उसे पकड़ा, एक ऊंची लहर आयी। मैं उसके ऊपर तैरा, जैसे हम ऐसे में करते हैं पाई। साथ में मैंने इसे भी खींच लिया। दूसरी लहर छोटी थी, उसे जाने दिया। पर फिर और बड़ी ऊंची लहर आयी। फिर मैं उसके ऊपर लपका। लहरें आती रहीं। गोपू को पकड़ कर लहरों पर लपकना मुश्किल हो रहा था। कपड़े गीले होने की वजह से व जूतों में पानी भर जाने से गोपू का वजन भारी हो रहा था। भाग्य से कोई और बड़ी लहर नहीं आयी और मैं गोपू को किनारे पर खींच लाया।" जोज़े ने बात पूरी कर दी।

"जीसस का लाख-लाख शुक्रिया।" जमीन पर बैठ हाथ दायें-बायें ऊपर-नीचे कर क्रास बनाते हुए, "मेरे बहादुर बच्चे पर अपनी कृपा रखना" कहकर मारिया ने प्रार्थना की और जोज़े को चूमा। जोज़े शरमा गया।

दीदी ने पूछा, "क्या आप जोज़े को हमारे स्कूल में भेजेंगे ?"

"काश, मैं उसे आपके स्कूल में भेज सकता मैडम ! पर मैं मजबूर

हूं। मैं फीस और दूसरा खर्च नहीं उठा पाऊंगा।'' पेड्रो ने अपनी मजबूरी बतायी।

''आप उसकी चिंता मत कीजिए। हमारे स्कूल में हम कुछ बच्चों को बिना फीस लिए पढ़ाते हैं और दूसरे खर्चों के लिए छात्रवृत्ति भी देते हैं। मुझे विश्वास है कि स्कूल के न्यासी जोज़े की निशुल्क पढ़ाई और छात्रवृत्ति के लिए मान जायेंगे।'' दीदी ने विश्वास दिलाया।

और जोज़े दीदी के स्कूल में जाने लगा।

स्कूल के कारण जोज़े का जीवन कुछ बदला नहीं। वह भोर होते ही सागर किनारे जाता था। पिताजी के लौटने से पहले वह शंख-सीपियां आदि चुनता था। पिताजी के समुद्र से लौट आने पर वह मछलियां छांटने में मां की मदद करता। उसके बाद मां के साथ बाजार जाने की बजाय वह पिता के साथ घर जाकर स्कूल के लिए तैयार होता।

हालांकि स्कूल का नाम 'न्यू इरा स्कूल' था, पर लोग उसे दीदी का स्कूल ही कहते थे क्योंकि वह बच्चों की सबसे प्यारी अध्यापिका थीं। शुरू-शुरू में जोज़े को थोड़ा अटपटा लगता क्योंकि बाकी बच्चे धनी-मानी परिवारों के थे। वे बढ़िया कपड़ों की बनी स्कूल की ड्रेस पहनते और चमड़े के बने बस्ते लेकर व पानी की रंगबिरंगी बोतलें लटकाकर स्कूल आते थे।

''देखो, उसके पास पानी की बोतल भी नहीं है।'' जोज़े को नल से पानी पीते देख कर रेणु बोली।

''वह किताबें भी कपड़े के थैले में लाता है। हमारे जैसा बस्ता क्यों नहीं खरीदता बाजार से ?'' नीता ने पूछा।

''क्योंकि वह गरीब है। उसके पिता मछली पकड़ते हैं, आफिस में काम नहीं करते,'' छोटी आशा ने कारण बताया। जोज़े को खराब लगा।

''पर वह कितना बढ़िया तैरता है। उसने गोपू को बचाया। जोज़े बड़ा अच्छा और बहादुर लड़का है। मुझे बहुत अच्छा लगता है।'' गीतू अपनी तोतली जबान में बोली और फिर जोज़े के पास जाकर उसे टाफी दी।

''धन्यवाद गीतू। तुम भी बहुत अच्छी लड़की हो,'' जोज़े ने उससे कहा। पहले-पहल तो जोज़े को उनकी बातें समझ में नहीं आती थीं। बाद में वह उनकी भाषा समझने लगा।

जिन बच्चों को उसके बारे में पता नहीं था वे उसका मजाक उड़ाते, ''इतना बड़ा और अभी भी पहली क्लास में ! देखने में क्लास का डैडी लगता है। एकदम बुद्धू है।'' जोज़े लज्जित होता। वह अपनी क्लास में बड़ा था पर उसे एकदम शुरू से यानी अ आ इ ई और 1 2 3 से सीखना पड़ा था। पर अध्यापक उससे अच्छा व्यवहार करते थे। वे जानते थे कि जोज़े बहादुर और शरीफ लड़का है। वे उसकी पढ़ाई पर खास ध्यान देते थे। उसे अधिक समय भी देते थे। जोज़े बुद्धिमान था। जल्दी समझ जाता था। एक साल में उसने दो साल की पढ़ाई यानी क्लास एक और दो पूरी कर ली। उसकी तरक्की देखकर सब अध्यापक प्रसन्न थे।

स्कूल के दूसरे वर्ष में जोज़े को और अच्छा लगा क्योंकि अपनी उम्र के बच्चों से वह अब ज्यादा पिछड़ा हुआ नहीं था। अब वह तीसरी में था। दीदी विशेष ध्यान रखती थीं कि उसे न कोई चिढ़ाए, न तंग करे। सब दीदी का कहना मानते थे। दीदी कभी डांटती नहीं थीं। कहानी और कविताएं सुनाकर सिखाती थीं, ''हमेशा सच्चाई के रास्ते पर चलना चाहिए।''

जोज़े ने दो साल में मराठी और अंग्रेजी पढ़ना-लिखना सीख लिया। उसे गणित में मजा आता था। पर उसका प्रिय विषय था इतिहास। जब दीदी उन राजा-महाराजाओं तथा बहादुरों की कहानियां सुनातीं जिन्होंने देश के लिए सब कुछ त्याग दिया तो जोज़े बड़े चाव से सुनता था।

अब्राहम लिंकन की कहानी, जो गरीब परिवार से थे और जिन्हें लकड़ी काटने में कोई शर्म महसूस नहीं होती थी, जोज़े को बहुत प्रिय थी। दीदी बतातीं कि कोई भी काम या व्यवसाय छोटा या घटिया दर्जे का नहीं होता, अगर उसे ईमानदारी से किया जाये। जोज़े इससे बहुत प्रभावित हुआ और वह अपने पिताजी को सुबह और शाम स्कूल के बाद मदद करता रहा। कभी-कभी उसे केवल लंगोटी पहनकर अपने पिता की मदद करते देख अन्य बच्चे हंसते थे। पर जब वे जोज़े को बिना किसी डर के समुद्र में डुबकी लगाते या तैरते देखते तो मन ही मन उसकी प्रशंसा करते। हमउम्र होते हुए भी वे तैरना तक नहीं जानते थे।

शुरू में जब दोस्त उसका मजाक उड़ाते तो जोज़े विचलित होता था। लेकिन जब वे उससे कहते, ''जोज़े, हमें बड़ी-सी सीपी ला दो'' या ''क्या

जोज़े ने दो साल में मराठी और अंग्रेजी पढ़ना-लिखना सीख लिया

हमें तारा मछली ला दोगे,'' तब वह समुद्र में दूर तक तैरकर उन्हें बड़ी सीपी या शंख ला देता था। तब उसे अपने पर बड़ा गर्व होता था। धीरे-धीरे उसने स्कूल में कई मित्र बना लिए। पर दीदी उसकी सबसे अच्छी दोस्त थीं।

एक दिन उनकी विज्ञान की अध्यापिका कुछ सीपियां और समुद्री खर-पतवार कक्षा में ले आयीं।

''बता सकते हो ये क्या हैं ?'' उन्होंने मखमली हरी खर-पतवार या घास दिखाकर पूछा। क़िसी ने जवाब नहीं दिया।

''क्या कोई नहीं ज़ानता ?'' उन्होंने पूछा।

''यह समुद्री खर-पतवार यानी घास है जो समुद्र तट पर चट्टानों के बीच बनी छोटी-छोटी तलैयों में मिलती है।'' जोज़े ने आत्मविश्वास से उत्तर दिया।

''एकदम सही। बहुत अच्छे, जोज़े। पर तुम इसके बारे में कैसे जानते हो ?'' अध्यापिका ने पूछा।

''मैडम, मेरे पास ऐसी और दूसरी कई तरह की समुद्री घास है। मेरे दोस्त साहिबा ने इनके बारे में मुझे जानकारी दी थी,'' जोज़े ने बताया।

''क्या वह सब मुझे दिखाओगे ? स्कूल में हम छोटा-सा मत्स्यालय (मछलीघर) और संग्रहालय बनाएंगे। लाओगे उन्हें ?'' अध्यापिका ने पूछा।

जोज़े हिचकिचाया। वह अपने खजाने को खोना नहीं चाहता था। उसने बड़े प्यार से और लगन से उन्हें इकट्ठा किया था। और उन्हें साहिबा को भी तो दिखाना था। क्या जवाब दे, उसे सूझ नहीं रहा था।

उसकी दुविधा देखकर अध्यापिका ने आश्वासन दिया, ''अगर तुम उसे स्कूल को नहीं देना चाहते तो हम तुमसे उन्हें छीनेंगे या लेंगे नहीं। पर कम से कम हमें दिखा तो सकते हो।''

इससे पहले कि जोज़े कुछ जवाब दे, घंटी बजी और बच्चे खेलने के लिए मैदान की तरफ दौड़े।

जोज़े अच्छा तैराक था, पर उसे कोई दूसरा खेल खेलना नहीं आता था।

पढ़ाई की तरह खेलों के लिए भी दीदी उसे प्रोत्साहित करती थीं। उसके प्रोत्साहन के कारण ही ज़ोजे ने 'खो खो' और 'कबड्डी' सीखी और काफी अच्छा खेलने लगा।

एक दिन जब वह स्कूल पहुंचा तो गोपू ने पूछा, ''जोज़े, क्या तुम भी 'कार्निवाल' जाओगे ?'' उन दिनों सब 'कार्निवाल' के त्योहार के बारे में ही बातें करते रहते थे जो गोवा का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है।

''मैं नहीं जाता। मैंने कभी देखा ही नहीं,'' जोज़े ने उत्तर दिया।

''क्या, कभी देखा ही नहीं ?'' अशोक ने आश्चर्य से पूछा।

''तुम्हें देखना चाहिए। बहुत मजा आता है। मोटा राजा 'मोमो' अपनी रानी और सरदारों के साथ जुलूस में आता है। वे गाते हैं, नाचते हैं। उसके बाद आतिशबाजी होती है और बढ़िया चीजें खाने को मिलती हैं,'' अशोक बताता जा रहा था।

''मैं नहीं जा सकता। मेरे माई, पाई या पास-पड़ोस से कभी कोई वहां नहीं गया। पर तुम्हारी बातें सुनकर मेरा जाने को दिल कर रहा है,'' जोज़े सपनों भरी आंखों से बोला।

''मैं ले जाऊंगी तुम्हें, जोज़े,'' दीदी बोलीं।

''सच दीदी !'' उसकी आंखों में चमक आ गयी, पर जल्दी ही उसे अहसास हुआ और बोला, ''नहीं-नहीं, मुझे आपको इतनी तकलीफ नहीं देनी चाहिए।''

''तकलीफ कैसी। मैं अपने भाई की गाड़ी में जा रही हूं। तुम्हारे लिए जगह हो जायेगी,'' दीदी ने कहा।

जोज़े ने 'खो खो' और 'कबड्डी' सीखी और काफी अच्छा खेलने लगा

कार्निवाल में

माता-पिता की अनुमति लेनें में जोज़े को कोई कठिनाई नहीं हुई। जब दीदी गाड़ी लेकर आयीं तो जोज़े तैयार खड़ा था।

दो घंटे के सफर के बाद वे दीदी की मित्र के घर पहुंचे। घर की पहली मंजिल की गैलरी से वे जुलूस देखने वाले थे। चारों तरफ उत्साह था। सड़कों पर भीड़ थी। सुंदर कपड़ों में सजे लोग जुलूस देखने आये थे। जब जुलूस शुरू हुआ तो लोगों का उत्साह अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया।

गायकों के समूह आये, उनके पीछे नर्तकों की टोली। काले सूट और टोपी पहने लड़के 'आगे पोरी' गा रहे थे, तो बालों में फूल सजाकर अपने रंगबिरंगे घाघरे (स्कर्ट) फहराती लड़कियां झूम रही थीं और दर्शक तालियों से ताल दे रहे थे।

फिर आये कुछ नर्तक जो गोवा का लोकप्रिय लोक-नृत्य 'देखणी' नाच रहे थे और उनके बाद नर्तकों की एक ओर टोली झूमती हुई आयी। एक के पीछे एक आकर नर्तक ताल और रंगों का अनोखा संगम बना रहे थे। नर्तकों और गायकों को जुलूस में मस्ती में नाचते-गाते देख कर जोज़े रोमांचित हो उठा।

जैसे-जैसे रफ्तार बढ़ती गयी, दर्शक भी तालियां बजाकर झूमने लगे। तभी राजा 'मोमो' के पधारने की घोषणा हुई। सबकी नजरें झांकी की तरफ मुड़ीं जिस पर राजा 'मोमो' और उसकी रानी बैठे थे। राजा ने सुनहरे जालवाली नीले रंग की साटिन की पोशाक पहनी हुई थी और रानी गुलाबी रंग की चांदी की जालवाली पोशाक में सज रही थी। दोनों के सिर पर

मुकुट थे। राजा के हाथ में सोने का 'दंड' भी था। एकाएक भीड़ में से कोई बोला, "पुर्तगाली तानाशाही मुर्दाबाद ! सालाज़ार मुर्दाबाद ! पुर्तगालियो, लौट जाओ ! भारत माता जिंदाबाद ! गांधीजी जिंदाबाद ! पंडित जवाहर लाल नेहरू जिंदाबाद !" लोगों ने भी नारे लगाये और सारा माहौल "भारत माता की जय", "भारत माता जिंदाबाद" के नारों से गूंज उठा। सैनिक नारा लगाने वालों को खोजने की कोशिश करने लगे और भगदड़ मच गयी। जोज़े ने लोगों को तितर-बितर होकर भागते देखा। एकाएक जोज़े आगे झुका और चिल्लाया, "साहिबा, साहिबा !"

नीचे छलांग मारने के लिए जोज़े गैलरी की मुंडेर पर जा चढ़ा। दीदी ने उसे पीछे खींचा।

"दीदी, जाने दो मुझे। मैंने साहिबा को देखा है। वह देखो, वहां है।" जोज़े ने इशारे से दिखाया। दीदी ने उस तरफ देखा। एक लंबा दाढ़ी वाला आदमी उनकी तरफ हाथ हिला रहा था।

"देखो, वह मुझे बुला रहा है," जोज़े ने छूटने की कोशिश की।

"तुम्हें विश्वास है वही तुम्हारा साहिबा है ?"

"हां, बिलकुल। ईश्वर कसम, वही मेरा साहिबा है ?" जोज़े ने छाती पर क्रास बनाते हुए कसम खायी।

"यह कैसे हो सकता है ? वह तो प्रसिद्ध...," दीदी ने अपने आपको रोका क्योंकि बाकी सब उनकी बात सुनकर नीचे देखने लगे थे।

दीदी ने पूछा, "कैसे जानते हो तुम उसे ?"

"साहिबा मेरा सबसे अच्छा दोस्त है। वही तो है जिसने मुझे शंख-सीपियों और मछलियों की जानकारी दी। उसने मेरे खजाने के लिए 'डॉग व्हाक' का शंख दिया है और वचन भी दिया है कि वह मेरा खजाना देखने आयेगा। वह आया है। मुझे उससे मिलना ही होगा," जोज़े ने आग्रह किया।

'कैसे मुमकिन है यह ?' दीदी सोचने लगीं।

'उसके चचेरे भाई मंगेश पै जैसा स्वतंत्रता सेनानी जोज़े का दोस्त कैसे हो सकता है ? वह भूमिगत हो गया था। पुर्तगाली पुलिस उसकी ताक में थी। पर चालाक लोमड़ी की तरह वह उन्हें हर बार चकमा दे देता था।

उसके बारे में कई कहानियां बनने लगी थीं। गोवा के स्वतंत्रता प्रेमी लोग उसे नायक का सम्मान देते थे। और वह छोटा लड़का जोज़े कसम खा रहा था कि वह उसका सबसे अच्छा दोस्त है। किसी काम के सिलसिले में वहां गया होगा, और जोज़े से मिला होगा।' दीदी मन की उलझन सुलझा रही थीं।

"क्या सोच रही हो, दीदी ? मैं सच कह रहा हूं। मुझे जाने दो। मैं उसे अपना खजाना दिखाना चाहता हूं। मुझे जाकर उन्हें पकड़ना होगा।" जोज़े ने फिर छूटने की कोशिश की।

"तुम उससे मिल सकते हो। पर अभी नहीं। अगर वह तुम्हारा दोस्त है तो वह जानता होगा कि तुम रोज सुबह समुद्र तट पर जाते हो। वह तुमसे कल मिलेगा," दीदी ने विश्वास दिलाया।

"इस भीड़ में क्या तुम उसे ढूंढ़ सकोगे ? देखो, नीचे सड़क पर कैसी भगदड़ मच रही है," दीदी ने कहा।

शांति बनाने के बजाय पुर्तगाली सिपाही लोगों को धकेल रहे थे और कोड़ों से मार रहे थे। जोज़े, दीदी और उनके मित्र सुरक्षित थे क्योंकि वे घर की गैलरी में बैठे थे। कुछ देर के बाद सब शांत हो गया। लेकिन 'कार्निवाल' का मजा किरकिरा हो गया था। दीदी और उनकी मित्र चिंतित हो गयी थीं। उन्होंने खाने का आनंद लेने का प्रयत्न किया। जोज़े के लिए उन्होंने गुब्बारे भी खरीदे।

दीदी की मित्र ने जोज़े के माता-पिता के लिए मिठाई का डिब्बा दिया। वापस लौटते समय रास्ते में जोज़े ने दीदी से पूछा, "वे सिपाही 'भारत माता जिंदाबाद' के नारे लगाने वालों को मार क्यों रहे थे ?"

दीदी ने समझाया, "हमारे गोवा पर आज भी पुर्तगाली शासन है। बाकी हिंदुस्तान की तरह हम आजाद नहीं हैं। पुर्तगाली गोवा छोड़कर अपने देश वापस नहीं जाना चाहते। वे गोवा को आजाद होकर हिंदुस्तान का हिस्सा बनने नहीं देना चाहते। इसलिए हम अपने दूसरे भारतीय भाई-बहनों से बिछड़े हुए हैं।"

"दीदी, पुर्तगाली गोवा में कब और क्यों आये ?" जोज़े ने पूछा।

"7 जुलाई 1447 को वास्को डी-गामा ने गोवा की भूमि पर कदम

रखा था। उस समय हिंदुस्तान बड़ा संपन्न देश था और विदेशी व्यापारियों को आकर्षित करता था। ये व्यापारी मसाले, कपड़ा, हीरे-जवाहरात और हस्त-शिल्प की वस्तुओं का व्यापार करते थे। गोवा में और भी एक विशेष बात थी। बंदरगाह होने के कारण समुद्र के रास्ते व्यापार करने के लिए यह उपयुक्त था। अपना स्थान पक्का करने और अपनी धन-दौलत की रक्षा के लिए उन्होंने फौज रखना आरंभ किया। जहां कहीं स्थानीय शासक कमजोर होते थे, ये व्यापारी उन पर विजय प्राप्त कर लेते। समय गुजरने के साथ उन्होंने काफी भूमि पर अपना कब्जा जमा लिया।''

''क्या गोवा के लोगों ने विरोध नहीं किया ?'' मोहन भाई ने पूछा।

''किया। परंतु संगठित और सुसज्जित पुर्तगाली फौज के सामने वे खड़े न रह सके, और खेमा सावंत ने 'पेड़णे', 'डिचोली' और 'सत्तरी' के इलाके 29 जनवरी 1788 की संधि के तहत पुर्तगालियों को दिये।''

''1791 में सौंदे के राजा ने भी 'फोंडा', 'केपे', 'काणकोण' और 'सांगे' दे दिये,'' दीदी ने बताया।

''दीदी, क्या इसका मतलब यह हुआ कि गोवा का कोई भी राजा या लोग पुर्तगाली ताकत के सामने टिक न सके ?'' जोज़े जानना चाहता था।

''क्यों नहीं ? हमारे गोवा के लोग भी आजादी के लिए सालों से लड़ रहे हैं। 17वीं सदी के शुरू से जब पुर्तगालियों ने गोवा के काफी हिस्सों पर कब्जा कर लिया था, उस समय से सत्तरी जैसे इलाकों में सशस्त्र विद्रोह हुए। वहां पर राणे के लोगों ने पुर्तगालियों को अपनी स्थिति मजबूत नहीं करने दी।''

''हां, मुझे याद है। मैंने इतिहास में 'राणे के विद्रोह' के बारे में पढ़ा था।'' मोहन भाई ने कहा।

''केवल राणे ही नहीं, कई लोग पुर्तगाली तानाशाही और जुल्मों के खिलाफ खड़े हुए। दो प्रसिद्ध पादरी दायतान फ्रांसिस्को और एंटोनियो गोंसाल्वीस तो लोगों की फरियाद लेकर पुर्तगाल भी गये थे। पर कुछ हासिल न हुआ। उन्होंने अनुभव किया कि पुर्तगाली सत्ता से आजादी पाकर ही सारे प्रश्नों का अंत होगा। कई धार्मिक नेताओं, पादरियों और सिपाहियों

ने भी उनका साथ दिया। फादर पिंटो ने पुर्तगालियों के खिलाफ लड़ने की योजना बनायी। पर गद्दार अफसर एंटोनियो तोश्कानो ने योजना पुर्तगालियों को बता दी। गवर्नर ने सेना को कार्रवाई का आदेश दिया। 47 लोग, जिनमें 17 पादरी और 5 फौजी अफसर थे, कैद कर लिए गये और उन्हें सख्त सजा सुनाई गयी। इसको 'पिंटों का विद्रोह या षड्यंत्र' कहा जाता है,'' दीदी ने बताया।

''इससे पुर्तगालियों को धक्का तो लगा होगा,'' मोहन भाई बोला।

''हां, लगा तो,'' दीदी ने कहा, ''लेकिन इस विद्रोह के बाद बरनांडो डी' सिल्वा ने, जिसे पुर्तगाली राजा ने 'प्रीफेक्ट' या नायक बनाया था, विद्रोह किया।''

''राणे के व्रिदोह का क्या हुआ ?'' जोज़े ने पूछा।

''वे लगातार चलते रहे। उनमें से एक के नेता थे दीपाजी राणे। पुर्तगालियों ने लोगों के निजी और सामाजिक जीवन में दखल देना प्रारंभ किया। आदेश निकाला गया, ''गांवों या शहरों की सड़कों पर जाते समय पुरुषों को पतलून और स्त्रियों को खास तरह का ब्जाउज पहनना होगा।'' इस आदेश से लोगों को गुस्सा आया। पुर्तगालियों ने राणे के हक और सत्ता के प्रति किये वायदों को तोड़ा और उन्होंने राणे की जमीन-जायदाद पर कब्जा कर लिया। क्रोधित दीपाजी राणे ने पुर्तगाली किलों पर हमले किये और उन्हें फोंडा, डिचोली और काणकोण से खदेड़ दिया। दीपाजी को पकड़ने गवर्नर बड़ी सेना के साथ आया, पर उसे मुंह की खानी पड़ी। इससे लोगों का आत्मविश्वास बढ़ा, उन्हें गर्व महसूस हुआ,'' दीदी ने बताया।

''शाबास !'' जोज़े चिल्लाया।

''विद्रोह तीन वर्ष यानी 1852 से 1855 तक चलता रहा। अंत में पुर्तगाली गवर्नर को इस्तीफा देना पड़ा। फिर पुर्तगालियों और दीपाजी राणे में संधि हुई। दीपाजी को 'कप्तान' की सम्मानजनक पदवी दी गयी।''

''इसका मतलब कि गोवा के लोग भी झांसी की रानी तथा दूसरे बहादुर भारतीयों की तरह लड़े,'' जोज़े ने कहा।

''हां, लगभग इसी समय भारत में स्वतंत्रता की पहली लड़ाई मेरठ से शुरू हुई और पूरे उत्तर तथा मध्य भारत में फैल गयी,'' मोहन भाई

ने बताया।

"दीदी, दीपाजी राणे के विद्रोह के बाद गोवा में क्या हुआ ?" जोज़े ने पूछा।

"जैसे-जैसे समय बीतता गया, राणे और अन्य लोगों को विश्वास हो गया कि पुर्तगाली अपने वायदों के प्रति सच्चे नहीं हैं। संधि या करार एक बहाना था। दादा राणे ने 1888 और फिर 1912 में विद्रोह किया।"

"पर उसके बाद सशस्त्र विद्रोह क्यों नहीं हुए, पता नहीं ?" मोहन भाई ने शंका जतायी।

डा. लोहिया

"गांधीजी के आने के बाद विद्रोह का रूप अहिंसक हो गया। गोवा नेशनल कांग्रेस की स्थापना जब 1929 में डा. त्रिस्तोड ब्रेगैंजा कुन्हे के नेतृत्व में हुई, तब असली अर्थ में यह जनता का आंदोलन बन गया। गोवा की स्वतंत्रता के लिए लड़ने वालों ने और भी कई संस्थाएं बनायीं। वे गुप्त सभाएं करते थे, प्रभात फेरियों और सभाओं के माध्यम से लोगों में चेतना जगाते थे। छोटे-छोटे इश्तिहार भी बांटते थे।

"ऐसी ही एक सभा डा. राम मनोहर लोहिया ने 18 जून 1946 को मडगांव में बुलायी थी। बड़ी सभा को संबोधित कर डा. लोहिया ने पुर्तगाली सरकार को चुनौती दी थी। उनके साथ डा. जुलियो मैंज़िस भी थे। डा. लोहिया ने बोलना प्रारंभ ही किया था कि पुर्तगाली प्रशासक ने उन्हें चेतावनी

दी। डा. लोहिया ने ध्यान नहीं दिया। प्रशासक ने अपनी पिस्तौल डा. लोहिया पर तान दी। लोग सांस रोककर देखने लगे। डा. लोहिया ने पिस्तौल को हाथ से धकेल दिया। लोगों ने "डा. लोहिया जिंदाबाद" के नारे लगाये। डा. लोहिया और डा. मैंज़िस को गिरफ्तार कर लिया गया। लोग उनके साथ हो लिये। हजारों को कैद किया गया। मडगांव की सड़कें और बाजार "भारत माता की जय" और "डा. लोहिया जिंदाबाद" के नारों से गूंज उठीं। जिस मैदान पर डा. लोहिया ने सभा बुलायी थी उसे आज भी लोहिया मैदान कहा जाता है।

"उस समय हिंदुस्तान आजादी की दहलीज पर खड़ा था। इसलिए पुर्तगालियों ने आजादी के आंदोलन को दबाने के लिए विदेशी फौजें भी इस्तेमाल कीं।"

"यह तो एकदम गलत था," जोज़े बोल उठा।

"पर स्वतंत्रता सेनानियों ने हार नहीं मानी। वे मुंबई चले गये। उन्होंने तय किया कि वे अपनी गतिविधियां वहां से चलायेंगे। वहां वे कुछ दिन शांत रहे। हो सकता है कि वे अपने आपको संगठित कर रहे हों। नेहरू जी के शांति प्रयत्नों से कोई नतीजा नहीं निकलता देख उन्हें कुंठा होने लगी थी।"

"स्वतंत्रता सेनानियों ने खुद प्रयत्न क्यों नहीं किये ?" जोज़े ने सवाल किया।

"उन्होंने किये। 24 जुलाई 1954 की रात युनाइटेड फ्रंट आफ गोअंस के स्वयंसेवक गुजरात के 'वापी' से पुर्तगाली क्षेत्र 'दादरा' में घुसे। उनके पास बंदूकें थीं। उन्होंने दादरा पर कब्जा कर लिया। लिस्बन ने नयी दिल्ली से शिकायत की।"

"फिर... ," मोहन ने पूछा।

"कुछ दिन बाद, 2 अगस्त को 'आजाद गोमंतक दल' के स्वयंसेवक नगर हवेली में दाखिल हुए। उन्होंने 'नरोली' को आजाद कराया। दूसरी ओर से गोअन पीपुल्स पार्टी के स्वयंसेवकों ने स्थानीय 'वारली' जनजाति की मदद से नगर हवेली की ओर से हमला करके योजना पूरी की। 150 से अधिक पुर्तगाली सिपाहियों को बंदी बनाया गया।"

"कितना अद्भुत होगा ना वह दृश्य !" मोहन ने पूछा।

"हां, क्या अपूर्व घटना होगी ! पर गोवा में क्या हुआ, दीदी ?" जोज़े ने पूछा।

"इससे नयी आशा जगी। गोवा की आजादी के लिए बहुत सी संस्थाएं कार्यरत थीं।"

"उन सबने एक होकर काम करने का निश्चय किया। उन्होंने गोवा कार्य समिति की स्थापना की। समिति ने सत्याग्रहियों की टोलियां गोवा में भेजने की योजना बनायी। पहली टोली 15 अगस्त 1954 को गोवा में प्रवेश करने वाली थी।

"इस योजना को बहुत ज्यादा समर्थन मिला। गोवा और गोवा के बाहर के हजारों लोग सत्याग्रही बनकर गोवा में जाने के लिए आगे आये। नांगली, बांदा और रेडी—ये तीन स्थान प्रवेश के लिए चुने गये। सत्याग्रही शांतिपूर्वक 'चला पुढे, चला पुढे, रोऊ चला पणजी वार विजयी ज़ेंडे' जैसे देशभक्ति के गीत गाते हुए बढ़ते गये।

"दो जगह पुर्तगाली सिपाहियों ने उन्हें रोका और सत्याग्रहियों को कैद कर लिया। पर एक गुट 'तेरेखोल' तक पहुंच गया। उन्होंने तेरेखोल के किले पर कब्जा किया और तिरंगा लहराया। दूसरे दिन पुर्तगाली फौज वहां पहुंची और अहिंसक सत्याग्रहियों पर गोलियां बरसायीं। 12 लोग जख्मी हुए और एक शहीद हो गया। अनेक कैदी बनाए गये।"

"इस घटना से गोवा और गोवा के बाहर लोगों में क्रोध और रोष की लहर दौड़ गयी।"

"सभी भारतीय राजनैतिक पार्टियां नाराज थीं। उन्होंने गोवा, दमन और दिव में भारतीय सत्याग्रहियों को भेजने का निर्णय लिया।"

"मुझे याद है दीदी। 15 अगस्त 1955 को बड़ी संख्या में छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष सत्याग्रही गोवा में आये थे," मोहन ने कहा।

"हां, वह क्रोधित और दुखी लोगों का तात्कालिक आक्रोश था। इसलिए सुधा ताई जोशी जैसी गृहिणी भी पुर्तगाली सैनिकों की लाठियों और गोलियों का मुकाबला कर सकी। कई मारे गये। सैकड़ों घायल हो गये। सुधा ताई जोशी, ना. ग. गोरे, मधु लिमये जैसे नेताओं को जेल में डाल दिया गया।"

"यह सब तो निर्दयता थी," जोज़े ने कहा।

"बिलकुल निर्दयता थी। इसलिए इस तरह की निर्दयता को दूर रखने के लिए भारत के साथ लगने वाली सीमाएं तब से बंद कर दी गयी हैं,' दीदी ने बात पूरी की।

"पर क्या इससे कोई हल निकलेगा ? कितने दिन वे हमें अपने कब्जे में रख सकेंगे ?" मोहन ने पूछा।

"आशा है, ज्यादा दिन नहीं। अंतर्राष्ट्रीय मत पहले ही पुर्तगाल के विरुद्ध हो चुका हे। उन्हें गोवा छोड़ना ही पड़ेगा।" दीदी को पूरा विश्वास था।

"दूसरे दिन मैंने 'वायस आफ फ्रीडम' के रेडियो से सुना कि गोवा, दमन व दिव की स्वतंत्रता के लिए पूरे देश की ओर से एक सम्मेलन दिल्ली में हुआ, जिसमें जापान, ब्राजील, स्पेन, अमेरिका, इंग्लैंड और सोवियत रूस (अब रूस) के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। मुझे लगता है कि भारत

जोज़े ने जो अनुभव किया था, उसे जल्दी से घर जाकर माता-पिता को बताने के लिए वह बेताब था

सरकार अधिक सक्रिय होगी,'' मोहन बोला।

''हां, होगी ही। तुमने पढ़ा नहीं कि मुंबई में पं. जवाहर लाल नेहरू ने ऐलान किया है कि पुर्तगाल की निर्दयी हरकतों ने हमें प्रश्नों को सुलझाने के लिए अन्य मार्गों पर विचार करने के लिए बाध्य कर दिया है। और गोवा जल्दी ही आजाद होगा।''

''ओ दीदी, मैं चाहता हूं कि वे जल्दी ही कुछ करें और मैं उनकी कुछ मदद कर सकूं,'' छोटा जोज़े उत्साह से बोला।

''शक्तिशाली पुर्तगालियों से तुझ जैसा छुटका लड़ेगा ? मुझे तो विश्वास है कि दीदी ने जो बताया उसमें से तुम्हें कुछ भी समझ में नहीं आया। दीदी, लगता है तुम्हारा प्रयास बेकार गया,'' मोहन भाई ने जोज़े को चिढ़ाया।

''नहीं, मैंने ठीक से समझा है, दीदी। मैं सचमुच समझ गया हूं। और गोवा को आजाद करने में मैं अवश्य मदद करूंगा जैसे गोपू को समुद्र में डूबने से बचाने में मदद की,'' जोज़े ने कहा।

''मुझे पता है, तुम जरूर करोगे, मेरे नन्हे बहादुर,'' दीदी ने जोज़े को गले लगाकर कहा।

''लो, हम पहुंच गये वापस घर,'' मोहन ने गाड़ी रोककर कहा। जोज़े गाड़ी से कूदा। ''धन्यवाद दीदी, धन्यवाद मोहन भाई !'' उसने जो अनुभव किया था, उसे जल्दी से घर जाकर माता-पिता को बताने के लिए वह बेताब था।

घर की ओर दौड़ते हुए जोज़े को देख दीदी बोलीं, ''बड़ा प्यारा लड़का है।''

दीदी को जोज़े से स्नेह हो गया था। वह उसे अपने साथ गांव के मेलों में, अपने रिश्तेदारों के यहां पणजी और मडगांव ले जातीं। जोज़े भी दीदी को पूजा करने जितना प्यार करता था। उनके लिए फूल, सुंदर शंख और सीपियां लाता। जोज़े के माता-पिता भी दीदी का आदर करते थे। उनके मार्गदर्शन में अपने लड़के की प्रगति देखकर वे बड़े संतुष्ट थे।

एक और सपना

दूसरे दिन पहली किरण के साथ जोज़े जाग गया। वह झुग्गी से आंख बचाकर निकला और समुद्र तट की ओर भागा। अगर साहिबा जल्दी आ गया तो वह उसे मिले बिना चला जायेगा। अभी अंधेरा था, पर जोज़े को डर नहीं लगा। यह तो उसका अपना समुद्र तट था। उसका चप्पा-चप्पा उसका परिचित था। पांवों के नीचे की ठंडी रेत, पांवों में गुदगुदी करने वाले छोटे-छोटे केकड़े और बीच-बीच में उसके पैरों पर छलांग लगाने वाले मेंढक, सभी तो उसके परिचित थे।

लहरों का संगीत, चहचहाते पक्षी और झूमते नारियल के पेड़, सभी उसके मित्र थे। हर सुबह वे उसका स्वागत करते थे पर आज उनकी तरफ उसका ध्यान नहीं था। न ही उसे खजाने के लिए शंख-सीपियां चुनने में दिलचस्पी थी। उसकी आंखें साहिबा को दूर-दूर तक तट पर ढूंढ़ रही थीं, पर साहिबा का कोई नामोनिशान नहीं था। वह अपने खजाने के पास पहुंचा। 'चलो, साहिबा के आने तक उसे एक बार देख लूं' सोचकर वह नाव में चढ़ गया। तख्त हटाया। वह अंधेरे में ज्यादा कुछ देख न सका, पर उसे पता था कि हर शंख और सीपियां अपनी जगह पर मौजूद हैं। फिर उसने अपने खजाने को तख्त से ढंक दिया और नाव से बाहर आ गया। वह और आगे चलने लगा।

कोई भी नजर नहीं आ रहा था। तट पर खड़ी एक नाव पर वह बैठ गया। अंधेरा धीरे-धीरे छंट रहा था। सुबह की लालिमा आकाश पर छा रही थी। वापस आते हुए उसे लगा मानो उसे धोखा दिया गया हो।

"क्यों न मैं इस केकड़े को मार दूं ?"

तभी उसे कुछ आकृतियां नजर आयीं। वह उनकी ओर दौड़ा, पर वे मछुआरे थे। उनमें साहिबा नहीं था। अब उसे साहिबा पर गुस्सा आने लगा, "जब वह गोवा में है तो यहां क्यों नहीं आया ? उसने वायदा किया था कि जब भी वह यहां आयेगा, उससे मिलने जरूर आयेगा। दीदी ने भी यही कहा था। पर कहां है वह ? वह अपना वायदा कैसे तोड़ सकता है ?" उसी समय एक छोटे-से केकड़े ने उसके पैर पर छलांग लगायी। उसने गुस्से से पैर पटका।

"क्यों न मैं इस कुल्ली (केकड़े) को मार दूं ? क्यों मैं साहिबा का कहना मानूं, जब वह अपना वायदा पूरा नहीं करता ?" जोज़े चिल्लाया।

"जोज़े, जोज़े, कहां हो तुम ? स्कूल नहीं जाना क्या ?" मारिया उसे पुकार रही थी।

जोज़े झुग्गी की ओर दौड़ा। उसे स्कूल जरूर जाना था। प्रार्थना के समय वह चुपचाप खड़ा रहा। "तुम गा क्यों नहीं रहे थे जोज़े ?" कक्षा की शिक्षिका ने पूछा।

"मैं गा रहा था।"

"मैंने तुम्हारें होंठों को हिलते नहीं देखा।"

"मैं मन ही मन गा रहा था," जोज़े ने कहा।

"क्या बात है, कुछ तकलीफ है, जोज़े ?" शिक्षिका ने पूछा।

"नहीं, मैं ठीक हूं, बिलकुल ठीक हूं," जोज़े ने हड़बड़ाकर कहा और अपनी किताबें निकालने लगा। खाने की छुट्टी में भी वह औरों के साथ खेल के मैदान में नहीं गया। पेड़ के नीचे अकेला बैठा रहा। श्यामा दीदी ने उसे वहीं पेड़ के नीचे देखा।

"क्या तकलीफ है तुम्हें, जोज़े ? घर में कुछ हुआ है क्या ?" दीदी ने पूछा।

"नहीं।"

"फिर क्यों उखड़े हुए हो ? तुम्हारी कक्षा की शिक्षिका भी परेशान है तुम्हारे लिए।"

दीदी से कुछ नहीं छिपा सकता था जोज़े। वह बोल पड़ा, "साहिबा ने अपना वायदा तोड़ दिया। वह मुझसे मिलने नहीं आया। मैं पहली किरण

से समुद्र तट पर उसका इंतजार करता रहा।''

''जोज़े, उसे जरूरी काम पड़ गया होगा। हो सकता है, वह गोवा से बाहर चला गया हो। उसे बहुत काम होंगे। उसे जगह-जगह घूमना होता होगा। मुझे पक्का विश्वास है कि जब भी उसे थोड़ा-सा भी समय मिलेगा, वह तुमसे मिलने अवश्य आयेगा।'' दीदी ने समझाने का प्रयत्न किया।

जोज़े ने थोड़ी देर कुछ सोचा और उठ खड़ा हुआ। अपना मुंह पोंछा और बोला, ''मुझे क्षमा कर दो, दीदी। मैंने सबको परेशान किया। घर में माई को, कक्षा में शिक्षिका को और अब आपको।''

''चलो, अब अच्छे लड़के की तरह खेलने जाओ। इस तरह से तुम्हें परेशान नहीं होना चाहिए। अब तुम बड़े हो गये हो। तुम्हें अपने खजाने के लिए शंख-सीपियां चुननी चाहिए, और हां, पढ़ना भी चाहिए। तुम्हारी परीक्षा बस एक महीना दूर है,'' दीदी ने याद दिलाया।

''हां दीदी, मैं मन लगाकर पढ़ूंगा। क्या मैं इस वर्ष भी दो वर्षों की पढ़ाई एक वर्ष में कर लूं ?'' जोज़े अपने पुराने उत्साह से बोला।

''देखो, फरवरी समाप्त हो रहा है। एक महीने में तुम चौथी कक्षा की पढ़ाई कैसे पूरी करोगे ?'' दीदी ने संदेह जताया।

''मैं कर सकता हूं। मैं अपनी कक्षा में फर्स्ट और सबसे आगे हूं। मैं गोपू या अशोक से चौथी की पुस्तकें मांग लूंगा। अरे, पर उन्हें भी तो अपनी परीक्षा के लिए पुस्तकों की जरूरत होगी,'' जोज़े को अहसास हुआ।

''हां, गर्मी की छुट्टियों में तुम पढ़ सकते हो। दोपहर में तुम्हें समय मिलेगा। और छुट्टियों के बाद जून में जब स्कूल खुलेगा, हम तुम्हारी परीक्षा लेकर निर्णय ले सकेंगे कि तुम्हें पांचवीं में प्रवेश दिया जा सकता है या नहीं। और हां, एक बात बताओ, तुम्हें इतनी जल्दी क्यों है ?'' दीदी ने पूछा।

''मैं अपनी उम्र के योग्य कक्षा में पढ़ना चाहता हूं। फिर गोपू और अशोक मेरे साथ होंगे और माधव मेरा मजाक नहीं उड़ा सकेगा। वह मुझे क्लास का डैडी कहकर चिढ़ाता है। फिर आप मेरी शिक्षिका होंगी।''

''ठीक है। हम देखेंगे। अब बताओ, तुमने कुछ खाया ? घर से खाना लाये हो ?'' जोज़े ने जवाब नहीं दिया।

''लो, ये केले खाओ। मैं जानती थी कि तुम खाना नहीं लाए होगे। लो, ये लो,'' दीदी ने कहा।

जोज़े ने ज्यादा नखरे नहीं किये और केले खा लिये।

जैसे ही मार्च आया, स्कूल का माहौल पढ़ाई वाला हो गया। सभी वार्षिक परीक्षा की तैयारी में लग गये। जोज़े भी अपनी पढ़ाई में जुट गया।

सुबह वह समुद्र तट पर पिता की मदद करने जाता और बाकी समय किताबों में खोया रहता। खाने के लिए मारिया आवाज दे-देकर थक जाती।

उस दिन उसने नारियल और कच्चे आम डालकर खास 'हुमण' मछली की कढ़ी बनायी थी। वह जोज़े को बहुत अच्छी लगती थी।

खाना ठंडा हो रहा था। पर जोज़े खाने के लिए नहीं आ रहा था। मारिया से रहा नहीं गया। वह चिल्लायी, ''जोज़े, अगर खाने के लिए फौरन नहीं आये तो मैं तुम्हारी सारी किताबें समुद्र में फेंक दूंगी।''

''माई, तुम ऐसा क्यों कहती हो... ? किताबें तो भगवान होती हैं। क्या बाइबल समुद्र में फेंकोगी ?'' जोज़े की आंखों में आंसू आ गये थे।

''अरी औरत ! क्यों इस बच्चे को तंग कर रही हो ? जब गांव के लोग अपनी कचहरी के कागजात लेकर आते हैं और जोज़े से पढ़वाते हैं तो फूलकर कुप्पा हो जाती हो। हमारे पास-पड़ोस में पादरी या फादर डिमैलो के अलावा जोज़े ही तो पढ़ना-लिखना जानता है। तुम कुछ देर इंतजार नहीं कर सकती ताकि वह अपनी पढ़ाई पूरी कर ले ?' जोज़े के पिता बोले।

''मुझे उसकी सेहत की फिक्र है। देखते नहीं, जब से स्कूल जाने लगा है तब से कितना कमजोर हो गया है ? पर तुम दोनों मां की चिंता को क्या समझोगे ? तुम तो मुझ पर बरसना जानते हो। ठीक है, अब एक शब्द भी नहीं बोलूंगी। सिर्फ खाना बनाकर रखूंगी। दोनों जब मर्जी हो तब खा लेना,'' कहते हुए मारिया गुस्से से आंखों में आंसू लिए बाहर निकल गयी। जोज़े भी उसके पीछे गया। ''माई, मैं जानता हूं कि तुम मुझे प्यार करती हो। पर अपने हमउम्र बच्चों के साथ पांचवीं में जाने के लिए मुझे बहुत पढ़ना पड़ेगा। गुस्सा छोड़ो। मैं वायदा करता हूं कि मैं ठीक से और जब तुम बुलाओगी, खाना खाऊंगा। अंदर चलो अब। मैं तुम्हारे बिना खाना नहीं खा सकता, तुम जानती हो।''
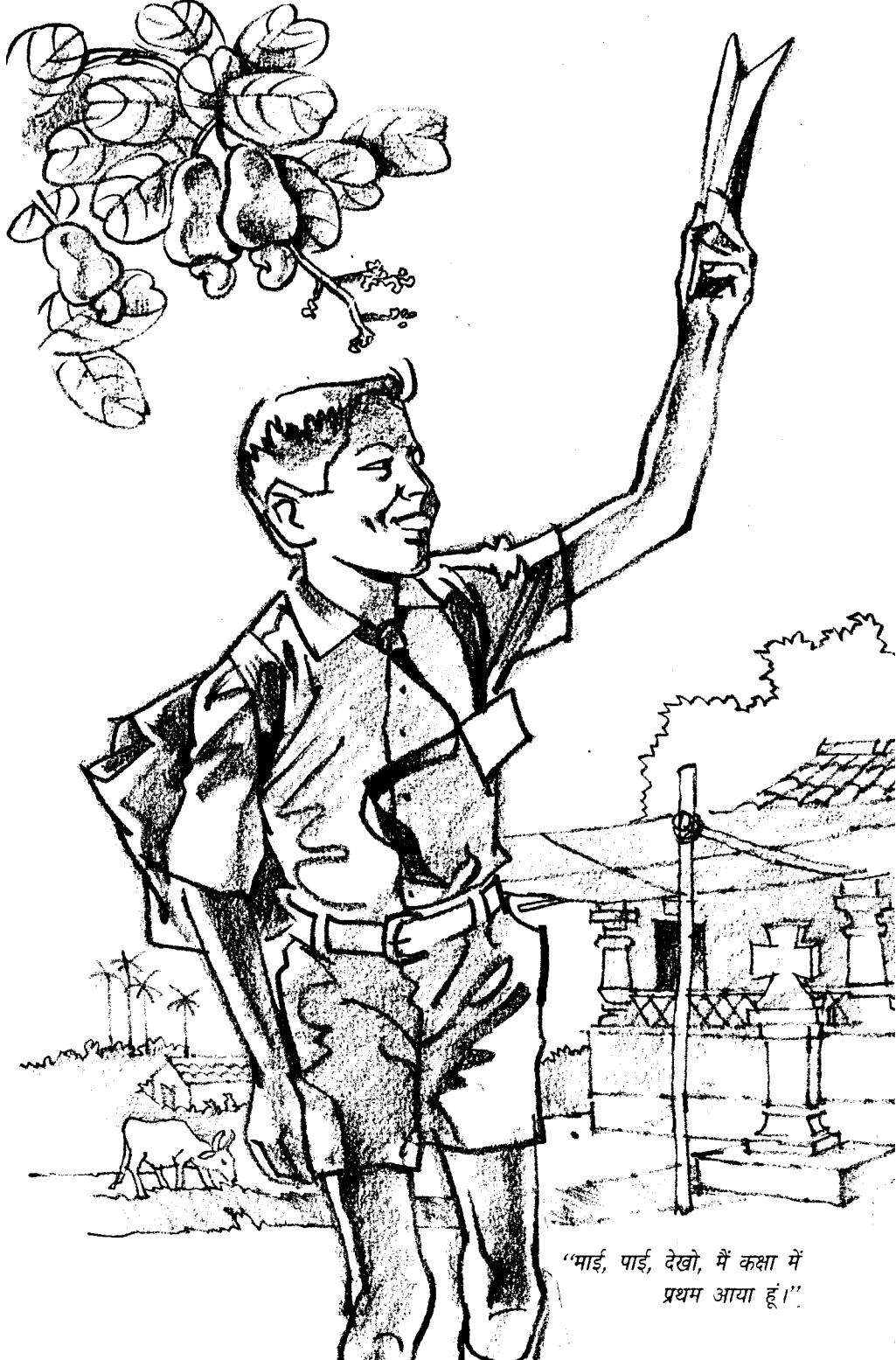
"माई, पाई, देखो, मैं कक्षा में प्रथम आया हूं।"

जोज़े माई के गले लग गया और उसके आंसू पोंछ दिए।

"ओ, माझो मोगाचो चेडो (मेरा लाड़ला)," कह मारिया ने जोज़े को सीने से लगाया और चूम लिया। उसके बाद खाने पर कभी झगड़ा नहीं हुआ।

दिन जल्दी ही बीत गये। परीक्षा प्रारंभ हुई और एक सप्ताह में ही समाप्त हो गयी।

जोज़े एक दिन चिल्लाता हुआ आया, "माई, पाई, देखो, मैं कक्षा में प्रथम आया हूं ! मुझे कितनी किताबें और इनाम मिले हैं।"

पड़ोसियों से झुग्गी भर गयी। "पेड्रो, तुम्हारा लड़का प्रथम आया है, तुम्हें 'फेणी' पिलानी होगी," फ्रांसिस बोला।

"हां पेड्रो साहिबा, पिलानी ही पड़ेगी," और लोगों ने भी फ्रांसिस का साथ दिया।

"नहीं। यहां जोज़े और दूसरे बच्चे भी हैं, यहां कोई नहीं पियेगा," मारिया ने डांटकर कहा।

पुरुष वर्ग फेणी पीने ठेके पर चले गये। औरतें और बच्चे भी पुरस्कार और पुस्तकें देखने के बाद अपने घर चले गये।

"बेटा, तुम इतनी सारी किताबों का क्या करोगे ? अब तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो चुकी है," मारिया ने झुग्गी को ठीक-ठाक करते हुए पूछा।

"माई, परीक्षा तो समाप्त हो गयी पर मैं छुट्टियों में पढ़ाई करना चाहता हूं।"

"पढ़ाई ! छुट्टियों में ? तुम छुट्टियों में भी स्कूल जाओगे ?" मारिया ने पूछा।

"माई, क्या तुम नहीं चाहती कि मैं अपनी उम्र के बच्चों के साथ उनकी ही कक्षा में पढ़ूं। फिर कोई भी तेरे बेटे को बुद्धू नहीं कहेगा।"

"तेरे जैसे कक्षा में प्रथम आने वाले होशियार लड़के को क्यों कोई बुद्धू कहेगा ?" उसने पूछा।

"क्योंकि मैं अपनी कक्षा में अन्य लड़कों से उम्र में बड़ा हूं। अगर मैं छुट्टियों में पढ़ूंगा तो मैं भी अपनी उम्र के लड़के-लड़कियों के साथ पांचवीं में पढ़ूंगा। और फिर दीदी मेरी शिक्षिका होंगी। कितना अच्छा होगा न ?

दीदी की कक्षा में पढ़ने का सपना मैं हमेशा देखता हूं। और अगर मैं पास होकर पांचवीं में जा सका तो दीदी को मुझ पर गर्व होगा।'' जोज़े ने बताया।

''दीदी तो तुम्हें वैसे भी प्यार करती हैं। हां, यह बहुत ही अच्छा होगा अगर तुम उनकी कक्षा में पढ़ो,'' मारिया ने माना। ''ईश्वर तुम्हें सफलता दे।''

''और माई, पता है, दीदी ने कहा है कि मैं छुट्टियों में कभी भी उनके घर जाकर पढ़ सकता हूं। पर मैं अपने ही इस घर में पढ़ूंगा। उनको तकलीफ नहीं दूंगा। मैं अधिक समय घर में ही रहूंगा। तुम जितना चाहो मुझे खिलाती रहना। तुम मेरे लिए झींगा मछली और आम का अचार बनाओगी और फिर मुझ पर चिल्लाओगी। है न ?'' जोज़े ने चिढ़ाया।

''हां, हां, तुम पर चिल्लाने के सिवा दूसरा काम ही नहीं है मेरे पास,'' कहते हुए मारिया चिल्लाने ही वाली थी कि उसने जोज़े का हंसता चेहरा देखा और दोनों हंस पड़े।

गर्मी समाप्त होने का पता उस दिन लगा जब एक दोपहर मारिया चिल्लायी, ''जोज़े, जोज़े, जल्दी आओ। सूखी मछली उठाने में मेरी मदद करो।'' मारिया ने झींगा मछली सुखाने धूप में रखी थी।

बरसात में जब मछुआरे समुद्र में मछली पकड़ने नहीं जा पाते, तब सूखी मछली काम आती है। बाजार में भी उसका दाम अच्छा मिलता है। जोज़े बाहर दौड़ा। बादल घिर आए थे। अंधेरा-सा हो गया था।

बारिश के आसार थे। दोनों पागलों की तरह फटाफट सूखी मछली इकट्ठी करने लगे। उन्होंने आखिरी कुछ मछलियां टोकरी में डाली ही थीं कि बड़ी-बड़ी बूंदें जोज़े के नाक और आंखों पर गिरीं। जोज़े ने दो टोकरे उठाये और झुग्गी में भागा। मारिया ने बाकी के दो टोकरे उठाये और अंदर भागी। ''क्या समय पर काम समाप्त किया,'' जोज़े बोला।

''हां, यीशू की कृपा है। वरना मेरी दो महीने की मेहनत बेकार हो जाती। बाप रे ! देखो तो, क्या मूसलाधार बारिश हो रही है।''

''जल्दी से काम करने के लिए मुझे धन्यवाद दो माई,'' बारिश को देखते हुए जोज़े बोला।

''गर्म चाय और प्याज के पकौड़ों के लिए क्या फिट मौसम है ! क्या
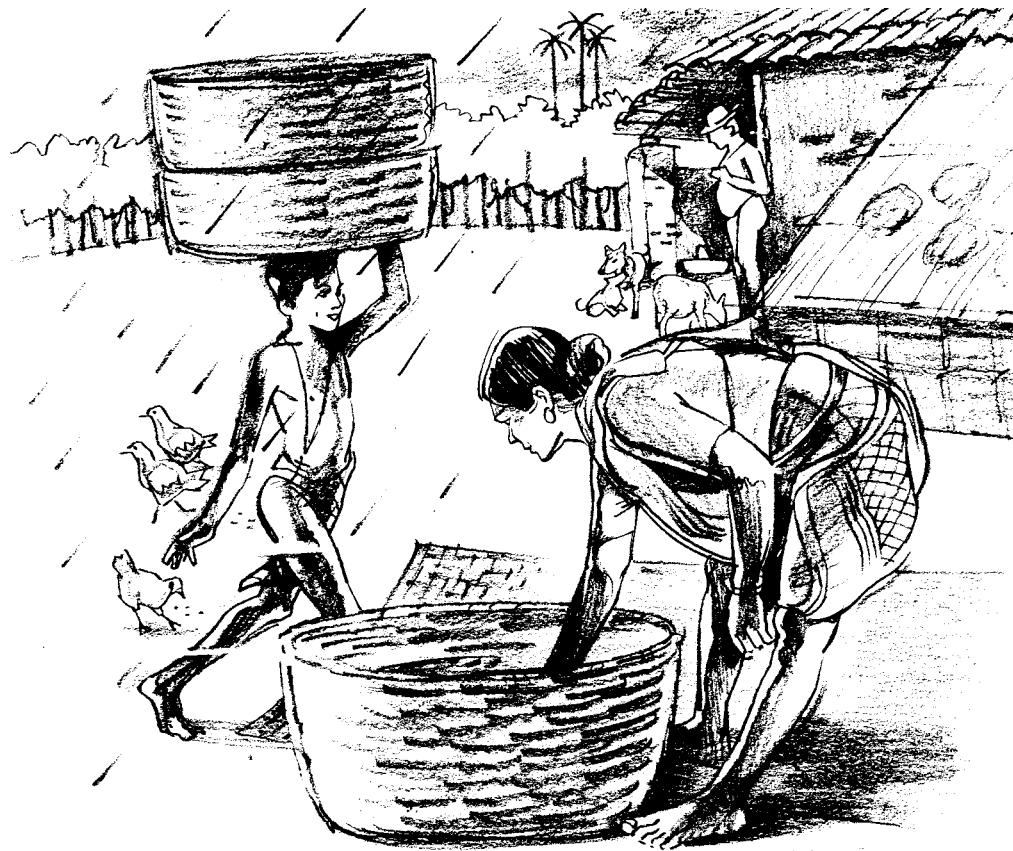
जोज़े ने दो टोकरे उठाये और झुग्गी में भागा

तुम भी ऐसा नहीं सोचते, जोज़े ?'' मारिया के चिल्लाने और बादलों की गड़गड़ाहट से जागा पेड्रो बोला।

''आलसी आदमी के शौक पूरे करने के लिए मेरे पास समय नहीं है,'' मारिया ने जवाब दिया।

''पर माई, मैंने तो तुम्हारी मदद की है। अधिकतर सूखी मछली मैंने ही टोकरी में भरी। मुझे चाय और भाजी (पकौड़े) मिलने चाहिए कि नहीं ?'' जोज़े ने पूछा।

''ठीक है, बनाती हूं। बारिश हो गयी, इसका मतलब जल्दी ही तुम्हारा स्कूल खुलेगा। फिर दोपहर में चाय-भाजी मांगने तुम घर में कहां होगे ?''

मारिया ने याद दिलाया।

"अरे हां, चार दिन ही तो बचे हैं छुट्टियों के," जोज़े बोला।

स्कूल के खयाल से वह खुश हो गया। जब गोपू और अशोक उसे अपनी ही कक्षा में देखेंगे तो कितने हैरान होंगे और माधव का चेहरा तो देखते ही बनेगा। सोच-सोचकर जोज़े को मजा आ रहा था। उसे पूरा विश्वास था कि वह चौथी की परीक्षा में उत्तीर्ण हो जायेगा। उसने छुट्टियों में दो बार दीदी के यहां जाकर अपनी पढ़ाई के बारे में बताया था। उनके मार्गदर्शन ने हमेशा की तरह उसकी मदद की।

जोज़े मुख्याध्यापक श्री सरदेसाई से मिला। उन्होंने श्री कामथ को जोज़े की समाजशास्त्र की परीक्षा लेने को कहा। इतिहास में जोज़े माहिर था। एटलस की मदद से उसने भूगोल की पढ़ाई की थी। उसे इतिहास में 'अति उत्तम' और भूगोल में 'उत्तम' दर्जा मिला।

उसे मराठी में भी 'उत्तम' और अंग्रेजी में 'संतोषजनक' ठहराया गया। गणित तो उसके लिए कोई समस्या था ही नहीं। दीदी ने उसे पहाड़े याद करवाये थे और मोहन भाई ने मौखिक गणित का भरपूर अभ्यास करवाया था।

"पांचवीं कक्षा में पढ़ने के योग्य है," मुख्याध्यापक ने उसके सर्टीफिकेट पर लिख दिया। दूसरे दिन जोज़े कक्षा में जाने से पहले दीदी से मिला। वह कक्षा के बाहर खड़ा रहा। दीदी के कक्षा में प्रवेश करते ही बच्चों ने खड़े होकर "नमस्ते मैडम" कहा।

"नमस्कार। बैठो।" दीदी ने हाजिरी लेनी शुरू की—अभिनव ! "जी मैडम।" वह एक-एक नाम लेती गयीं—आशा, अशोक, भास्कर, चेतन, देवकी, दीनानाथ, गजानन, गोपाल, हरि, हेमा। नाम सुनते ही बच्चे खड़े होकर अपनी हाजिरी लगवाते गये। दीदी कुछ क्षण रुकीं और बोलीं, "जोज़े।"

"ज़ी मैडम," जोज़े ने कक्षा में आते हुए कहा। सब बच्चे उसकी तरफ देखने लगे। सभी हैरान थे—'जोज़े हमारी कक्षा में ?'

"हां, जोज़े को पांचवीं कक्षा के योग्य पाया गया है। कल उसने पांचवीं के लिए परीक्षा दी थी।" दीदी ने बताया।

"बाप रे ! तुमने कब और कैसे पढ़ाई की ?"

"छुट्टियों में," जोज़े ने सहजता से जवाब दिया।

"यह तो बहुत अच्छा हुआ," गोपू खुशी से उछलकर बोला। "मैडम, जोज़े को कृपया मेरे साथ बैठने दिया जाये," गोपू ने विनती की।

"अगर सबको मंजूर है तो मुझे कोई एतराज नहीं," दीदी ने कहा।

"हां, बचाने वाला और बचाया गया, दोनों साथ हो जायें तो अच्छा है," माधव ने ताना मारा।

गोपू और जोज़े ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया और पास-पास बैठ गये।

दीदी ने पढ़ाना शुरू किया।

जोज़े का एक और सपना साकार हुआ।

चालाक लोमड़ी

पांचवीं कक्षा में जाकर जोज़े खुश था। गोपू उसका पक्का दोस्त बन गया था। पर दूसरों से वह बहुत कम बोलता था। उसे कक्षा के साथ-साथ चलने के लिए बहुत दूरी तय करनी थी। बहुत पढ़ना था। पुस्तकालय उसका प्रिय स्थान बन गया। पुस्तकालय के श्री चिटणीस उसका मार्गदर्शन करते थे। उसने साने गुरुजी की लिखी पुस्तकें 'दुखी', 'गोड गोष्टी', 'श्यामची आई' और अन्य कई पुस्तकें पढ़ डालीं। श्याम उसे अपना-सा लगता था। श्याम को उसकी तरह ही मुसीबत का सामना करना पड़ा था। पुस्तक में वर्णित कोंकण की भूमि तो बिलकुल गोवा जैसी ही लगी। वैसा ही समुद्र, नारियल, आम और कटहल के पेड़। जब वह पुस्तक पढ़ रहा था तो उसे लगा कि सब गोवा में ही हो रहा है। 'श्यामची आई' पुस्तक पढ़ने के बाद वह अपने माता-पिता से अधिक समझदारी और सम्मान से पेश आने लगा। उसे अहसास हुआ कि उसे अच्छी से अच्छी चीजें देने के लिए वे दोनों कितना त्याग कर रहे हैं।

पुस्तक 'गोट्या' का तो वह दीवाना हो गया। गोट्या का 'क्रिकेट मैच' और उसका 'नाटक खेलना' पढ़कर वह लोट-पोट हो गया। साथ ही, गोट्या और उसकी बहन सुमी का मिठाई और पटाखे गरीब बच्चों के साथ बांटकर दिवाली मनाना उसके दिल को छू गया। अब्राहम लिंकन की जीवनी पढ़ने के बाद उसे गर्व हुआ कि वह भी एक सामान्य मछुआरे का बेटा है और उसने निश्चय किया कि लिंकन की तरह वह भी अपना ध्येय प्राप्त करेगा। गांधीजी और अंबेडकर की जीवनी पढ़ने पर उसे पता लगा कि श्री चिटणीस ने उन्हें पढ़ने को क्यों कहा।

जब कक्षा में भारतीय इतिहास पढ़ते समय मराठों के बारे में पढ़ा तो जोज़े ने ह. ना. आपटे का 'उषाकाल' तथा बाबासाहब पुरंदर के 'रायगढ़' तथा 'प्रतापगढ़' ऐतिहासिक उपन्यास लेकर पढ़ डाले। उसका जी चाहता— काश ! वह ये सब किले देख सकता जहां 'गोरिल्ला' युद्ध हुए थे। किताबों के कारण बरसात के मौसम में स्कूल के दिन मजेदार बन जाते थे।

दीदी भी इतिहास और महाकाव्यों की कहानियां सुनाकर पढ़ाई को मनोरंजक बना देतीं। वह उन्हें त्योहारों की कहानियां सुनातीं। दीदी ने उन्हें 'राखी पूर्णिमा' के बारे में बताया। उन्होंने हुमायूं और राजपूत रानी की कहानी सुनाई कि कैसे रानी ने राखी भेजकर हुमायूं से मदद मांगी और हुमायूं भी एक सच्चे भाई की तरह मदद को दौड़ा और रानी की रक्षा की तथा दुश्मनों से उसका राज्य बचाया।

"लेकिन दीदी, हम यह त्योहार क्यों नहीं मनाते ?" जोज़े ने पूछा।

"हम मनाते हैं। पर हम उसे राखी पूर्णिमा नहीं कहते, हम कहते हैं 'नारली पूनम,'" दीदी ने जवाब दिया।

"हां हां। और उस दिन हम समुद्र को नारियल और फूल चढ़ाते हैं। शाम को जब पूनम का चांद निकलता है तो सारे मछुआरे समुद्र तट पर नाचते हैं। बूढ़ा 'रेमो' समुद्री राक्षस और सुंदर लड़की की कहानी नाच शुरू होने से पहले सुनाता है।" जोज़े ने बताया।

"क्या कहानी है वह ? मैंने कभी नहीं सुनी। जोज़े, तुम ही सुनाओ वह कहानी !" दीदी ने कहा।

"मैं ! मैं बूढ़े रेमो या आप की तरह नहीं सुना पाऊंगा यह कहानी," जोज़े हिचकिचाया।

"तुम जैसे सुना सकते हो वैसे ही सुनाओ," दीदी ने आग्रह किया। जोज़े ने सुनाना शुरू किया, "इसाबेल नाम की एक सुंदर लड़की थी। वह एंटोनी नामक मछुआरे की कन्या थी। उसे अपने पिता और समुद्र से बहुत प्यार था। समुद्र में जो राक्षस रहता था वह भी इसाबेल को बेटी की तरह प्यार करता था। उसे खेलने के लिए वह सुंदर-सुंदर शंख देता था। पहनने के लिए चमकते मोती देता था। जब वह समुद्र तट पर चलती थी तो समुद्री

राक्षस मुलायम लहरों से उसके कोमल पैर छूता था। तूफानी हवाएं और शोर मचाती लहरों को वह उससे दूर रखता था। उसकी हमेशा रक्षा करता था। पर अन्य लोग इसाबेल और उसके पिता से जलते थे। उन लोगों ने एक षड्यंत्र रचा। एक शाम उन्होंने एंटोनी की 'फेणी' में नशीली दवा मिलाई और उसे समुद्र तट पर ले गये। उस नशे में इसाबेल का पिता एंटोनी सीधा समुद्र में चलता गया और लहरों में खो गया। जब इसाबेल ने यह सुना तो वह समुद्र की ओर दौड़ी। लोगों के मना करने पर भी वह समुद्र के पानी में दौड़ती गयी और वह भी लापता हो गयी। समुद्री राक्षस को जब यह पता लगा तो वह क्रोधित हुआ। वह गरजा, चिल्लाया। समुद्र डर गया और उसमें पर्वतों जैसी ऊंची-ऊंची लहरें उठने लगीं। मछलियां मरने लगीं। मछुआरे समुद्र में जाने से डरने लगे। जीवन खतरे में था। मछुआरे मछली पकड़ने समुद्र में नहीं जा पाते। खाने या बेचने के लिए मछलियां नहीं थीं।

''सब बड़े दुखी थी। वे गांव के बूढ़े सयाने 'पॉल' के पास गये। उसने सलाह दी, ''समुद्री राक्षस से माफी मांगो। उसकी पूजा करो और उसे शांत करो। समुद्र को बचाओ। मछलियों और मछुआरों को बचाओ।

''बच्चे, बूढ़े, औरतें, मर्द, सभी मछुआरे समुद्र के पास गये। कई दिन प्रार्थना की। उन्होंने समुद्र को नारियल और फूल चढ़ाये।

''अंत में जब राक्षस शांत हुआ तो समुद्र के देवता ने उसे मछुआरों को माफ करने को कहा। राक्षस मान गया। वह 'नारली पूनम' का दिन था। लोगों ने उसका धन्यवाद किया और खुशी से नाचने गाने लगे। जब बरसात आती है, राक्षस को प्यारी इसाबेल की याद हो आती है और उसे फिर गुस्सा आ जाता है। उसके गुस्से से समुद्र में गरज के साथ ऊंची-ऊंची तूफानी लहरें उठती हैं। जब उसे नारियल और फूल चढ़ाये जाते हैं तब वह शांत हो जाता है।''

''अच्छा, इसीलिए 'नारली पूनम' को मछुआरे समुद्र में नारियल फेंकते हैं,'' दीदी ने कहा।

''हां, और फिर वे नाचते हैं और उसके बाद ही वे मछली पकड़ने समुद्र में जाते हैं,'' जोज़े ने कहानी समाप्त करते हुए कहा।

''कितनी सुंदर कहानी है !'' वंदना ने कहा। ''हां, और जोज़े ने सुनाई

भी कितनी अच्छी तरह से,'' गोपू बोला।

''नहीं, मैं बूढ़े रेमो जितनी रोचकता से नहीं सुना पाया। तुम्हें उससे यह कहानी सुननी चाहिए,'' जोज़े बोला।

''अब तो हम अगले वर्ष ही सुन पायेंगे क्योंकि 'राखी पूर्णिमा' हाल ही में हो चुकी है,'' दिनकर बोला।

''पर अब जल्दी ही 'गणेश चतुर्थी' आने वाली है। क्या उसके बारे में कोई कहानी नहीं है ?'' जोज़े ने पूछा।

''बहुत सारी हैं। पर उन्हें सुनने तुम्हें 'गणेश चतुर्थी' के दिन मेरे घर आना पड़ेगा।'' गोपू ने निमंत्रण दिया।

''मैं कैसे आ सकता हू ?'' जोज़े ने पूछा।

''क्यों नहीं आ सकते ?'' गोपू ने सवाल किया।

''मुझे तुम्हारे घर का पता नहीं है।''

''बहाना मत बनाओ। मैं आज ही तुम्हें अपना घर दिखा सकता हूं,'' गोपू ने कहा।

''पर गोपू, तुम्हारे माता-पिता ?''

''वे तुमसे मिलने के लिए बेताब हैं। मैं तुम्हारे बारे में उनको बता चुका हूं। वायदा करो, तुम आओगे।'' गोपू ने उससे वायदा ले ही लिया।

दीदी को जोज़े की हिचकिचाहट के कारण का अंदाजा था।

'गणेश चतुर्थी' की पूर्वसंध्या को दीदी जोज़े के घर गयीं। ''यह तुम्हारे लिए तोहफा लायी हूं,'' कहकर दीदी ने उसके लिए लाए हुए नये कपड़े उसे दिये।

''पर क्यों ? मैं इस तरह तोहफे नहीं ले सकता।''

''क्यों ? क्या मतलब ? हमारे यहां अपने प्यारे लोगों को उपहार देने का रिवाज है,'' दीदी ने कहा।

''मैं जानता हूं आप ऐसे ही कह रही हैं,'' जोज़े बोला।

''नहीं। मैं सच बता रही हूं। मुझे भी नयी साड़ी मिली है मेरे मोहन भैया से। तुम तो जानते हो उन्हें। मैं कल पहनूंगी उसे।'' जोज़े को फिर भी शक करते हुए देखकर दीदी ने आगे कहा, ''तुम गोपू से कल पूछकर सच्चाई पता कर सकते हो। वह भी कल नये कपड़ों में होगा। इसलिए

तुम्हें भी कल ये नये कपड़े पहनकर आना होगा।'' दीदी ने उससे वायदा लिया।

जब जोज़े गोपू के घर पहुंचा तो दरवाजा खुला ही था। वह थोड़ा हिचकिचाया।

''तुम जोज़े हो न ? आ जाओ।'' लंबे-से बुजुर्ग ने उसे अंदर बुलाया। उन्होंने सफेद धोती, रेशमी कमीज और सुनहरी बार्डर की पगड़ी पहनी हुई थी।

''गोपू, गोपू,'' उन्होंने आवाज दी। गोपू दौड़ा आया और खुशी से बोला, ''ओ जोज़े। तुम आ गये !''

''बाबा, यह मेरा दोस्त जोज़े है, जिसने...''

''दोस्त काफी है,'' जोज़े ने टोकते हुए कहा।

''मैंने ठीक पहचान लिया ना, जोज़े। हम दोनों मिल चुके हैं। अब इसे अंदर ले जाओ,'' बाबा ने कहा। वे बड़े कमरे में आये। गणेश की सुंदर सजावट देखकर जोज़े दंग रह गया। सुंदर फूलों से गणेश को सजाया गया था। रंगोली बनी हुई थी। गणेश हंस रहे थे। उनके एक हाथ में मोदक था और दूसरा हाथ भक्तों को आशीर्वाद दे रहा था। ऊपर के एक हाथ में त्रिशूल था और दूसरे में कमल।

जोज़े देखता ही रहा। उसे पता नहीं था कि उसे क्या करना चाहिए। उसी समय एक हंसमुख स्त्री कमरे में आयी और बोली, ''जोज़े, तुम आ गये ! हमें बड़ी खुशी हुई। गोपू, इसे प्रसाद दो और फिर अपने कमरे में ले जाओ।''

''यह मेरी मां है।'' गोपू ने बताया।

''आई (मां) बहुत सारा प्रसाद और साथ में चिवड़ा भी देना,'' गोपू ने कहा। वे दोनों ऊपर गोपू के कमरे में प्रसाद और 'चिवड़े की प्लेटें' लेकर गये। कमरे के बड़े आकार और सजावट को जोज़े घूम-घूमकर देखने लगा। गांधीजी, तिलक और सुभाष चन्द्र बोस की बड़ी-बड़ी तस्वीरें दीवारों पर लगी थीं। ''वह 'झांसी की रानी' की तस्वीर है ना ?'' दूसरी तरफ की दीवार को देखकर जोज़े बोला और एकदम स्तब्ध रह गया।

''क्या हुआ, जोज़े ?'' गोपू ने पूछा।

जोज़े देखता ही रहा, उसे पता नहीं था कि उसे क्या करना चाहिए

''मेरे साहिबा की फोटो तुम्हारे पास कैसे ?'' जोज़े ने सवाल किया।

''तुम्हारा साहिबा ?'' गोपू ने आश्चर्य से पूछा।

''हां, मेरा दोस्त साहिबा !'' जोज़े बोल पड़ा।

''यह तो मेरे बड़े भाई 'दादा' हैं।''

''यह नहीं हो सकता। वह तुम्हारा भाई कैसे हो सकता है ?'' जोज़े ने पूछा।

"क्यों नहीं हो सकता ?" गोपू हैरान था।

"मैं नहीं मानता।" जोज़े शंकित होकर बोला।

"तुम्हें मानना पड़ेगा। पर तुम कैसे जानते हो इन्हें ?" गोपू ने पूछा।

"यह मेरा दोस्त है जिसने मुझे शंख-सीपियों और मछलियों के बारे में बताया और मुझे दुर्लभ 'डॉग व्हाक' का शंख दिया। उसने वायदा किया था कि वह वापस आयेगा और मेरा खजाना देखेगा। पर पता नहीं कि...।"

"क्या पता नहीं तुम्हें, जोज़े ?" अंदर आते हुए दीदी ने पूछा।

"दीदी, इसे विश्वास नहीं होता कि यह फोटो मेरे दादा का है।" गोपू ने बताया।

"जोज़े, गोपू सच बोल रहा है," दीदी ने कहा।

"फिर तो वह यहीं रहता होगा। तो मुझसे मिलने क्यों नहीं आया वह ?" जोज़े ने शिकायत की।

"क्योंकि अब वह यहां नहीं रहता। वह तो गोवा की आजादी के लिए लड़ रहा है। इसलिए उसे घूमना पड़ता है।" दीदी ने समझाया। "वह प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी मंगेश पै है जिसे पुर्तगाली पुलिस 'चालाक लोमड़ी' कहती है।"

"इसका मतलब 'वंदे मातरम', 'पुर्तगालियो वापस जाओ' नारे लगाने वाले लोगों में उस दिन कार्निवाल में वह था न ?" जोज़े ने पूछा।

"हां, वह था। पर उसे भूमिगत होकर भागना पड़ा क्योंकि पुर्तगाली पुलिस उसके पीछे थी। और आज भी है," दीदी ने कहा।

"लेकिन दादा आज कैसे आयेंगे ? आई, बाबा उनसे मिलने की आस लगाये हुए हैं। वह हमेशा 'गणेश चतुर्थी' पर आते हैं। आज अगर वह न आ पाये तो हम सबको बड़ी निराशा होगी।" गोपू बोला।

आवाज आयी, "वह आ गया है।"

"दादा !" गोपू उनकी तरफ दौड़ा। "दादा, यह जोज़े है जिसने मुझे बचाया था और अब मेरा पक्का दोस्त है।"

"मैं जानता हूं इसे। समुद्र किनारे वाला यह मेरा छोटा दोस्त है और मैं इसका..."

"साहिबा," जोज़े खुशी से चिल्लाया।

"तुम आये कैसे ?" दीदी ने पूछा।

"कैसे आया मत पूछो। आ तो गया, पर अब यहां से निकल कैसे पाऊंगा, यह पता नहीं," मंगेश पै परेशान लग रहे थे।

"आप तो चालाक लोमड़ी हो, साहिबा ! आपके लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं है !" जोज़े बोला।

"हां, वे मुझे 'चालाक लोमड़ी' कहते तो हैं, पर आज पुलिस ने घर को घेर लिया है। बच निकलने का कोई रास्ता नहीं हे।"

"निराश मत हों। हम कुछ तरकीब सोचेंगे," दीदी बोलीं।

"क्या सोचोगे ? हमारे सारे रिश्तेदार, मित्र जो हमारे यहां आते थे, सबने हमसे नाता तोड़ लिया है। कोई मदद नहीं करेगा," साहिबा ने सच्चाई बयान की।

"मैं मदद करूंगा," जोज़े बोला।

"कैसे कर सकते हो ? तुम तो बच्चे हो," दादा बोले।

"मेरे पास योजना है," जोज़े ने कहा।

"क्या योजना है ?" गोपू को आशा की किरण नजर आयी।

"पास आओ।" चारों पास आकर खुसर-पुसर करने लगे।

शाम को गोपू के घर में भीड़ जमा थी। औरतें, बच्चे, मर्द—हर उम्र के लोग थे। पुलिस को पता नहीं लग रहा था कि हो क्या रहा है।

"क्या हो रहा है ?" सादे वेश वाले एक पुलिस वाले ने पूछा।

"गणेश के सामने नृत्य और संगीत का कार्यक्रम होने वाला है। आपको पता नहीं ?" भीड़ में से एक ने जवाब दिया।

उसी समय मछुआरों के वेश में बच्चों की टोली आयी। किसी के हाथ में चप्पू था तो किसी के हाथ में ढोल और शहनाई जैसा वाद्य।

"जल्दी चलो," एक बूढ़ा मछुआरा उन सबको अंदर ले गया। कुछ ही क्षणों में सगीत शुरू हुआ और बच्चे 'दामुच्या लग्नाक वैता' के लोक-गीत की धुन पर नाचने लगे। उसके बाद 'आगे पोरी' और एक के बाद एक कई अन्य गोवा के लोक-नृत्य बच्चों ने पेश किये।

कुछ पुलिस वाले भी अंदर आकर देखने लगे। प्रसाद और दूसरी खाने

की चीजें बांटी गयीं। नर्तक और गायक घर से निकलने लगे।

उनमें एक अधिक था पर किसी को पता नहीं लगा।

''धन्यवाद, जोज़े ! तुम्हारी तरकीब कमाल की थी। अब तुम्हें अपने घर लौट जाना होगा।''

''नहीं, साहिबा। आप भी चलिए, और हमारी झुग्गी में रात बिताइए।'' जोज़े ने आग्रह किया।

''नहीं, जोज़े। जब उन्हें पता लगेगा कि मैं अपने घर में नहीं हूं तो पुलिस जरूर तुम्हारी बस्ती में आयेगी,'' साहिबा ने समझाया।

''अभी तक मेरे बारे में तुम्हारे बस्ती वालों को कुछ भी पता नहीं है, इसलिए वे कुछ बताएंगे नहीं। अगर मैं तुम्हारे पास ठहरा तो उन्हें शक होगा। इसलिए अच्छा यही है कि तुम लौट जाओ। मैं सुबह जल्दी आकर तुम्हारा खजाना देखूंगा और ये मछुआरे के कपड़े लौटा दूंगा।''

''नहीं, नहीं, आप मत आना। पुलिस तलाश कर रही होगी। अब मैं शिकायत नहीं करूंगा। मैं समझ गया हूं। मैं यही आशा करता हूं कि गोवा आजाद हो और मैं 'चालाक लोमड़ी' से मिलूं,'' जोज़े बोला।

''तथास्तु ! पर जोज़े, आज तो यह छोटी लोमड़ी ज्यादा चालाक साबित हुई,'' साहिबा ने जोज़े को गले लगाकर कहा और चल दिया। अंधेरे में गायब होने तक साहिबा को जोज़े खड़ा-खड़ा देखता रहा। फिर बाद में वह भी लौट गया।

गुप्त योजना

अपने दोस्त साहिबा से 'चालाक छोटी लोमड़ी' का खिताब पाकर जोज़े उत्साहित हो उठा। उसे लगा कि अब वह भी गोवा के स्वातंत्रता संग्राम का हिस्सा है। अब वह रोजाना स्कूल के पुस्तकालय में जाकर अखबार, खासकर 'केसरी', पढ़कर जानने की कोशिश करता कि क्या कुछ हो रहा है। उसने पढ़ा कि विश्व के सारे देश अब गोवा को पुर्तगाली सत्ता से स्वतंत्र करने के प्रयास से सहमत हैं। सबसे पुर्तगाली तानाशाही और उपनिवेशवादी मानसिकता को धिक्कारा है।

गोवा में वातावरण तनावपूर्ण होने लगा था। लोग बेचैन थे। दिवाली आयी पर लोगों में हमेशा की तरह उत्साह और जोश नहीं था। दिवाली अनमने ढंग से मनायी गयी।

जोज़े दीदी और गोपू से मिलने गया। उन्होंने उसे दिवाली की मिठाइयां खिलायीं। उसे मिठाइयां अच्छी लगीं पर उनसे ज्यादा अच्छा लगा भूमिगत रेडियो 'स्वतंत्रता की आवाज' सुनना।

यह रेडियो स्टेशन 1954 में स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा दादरा और नगर हवेली पर कब्जे के बाद हथियाये गये वायरलेस सेट से शुरू किया गया था। मुंबई में रहने वाले गोवा के एक देशप्रेमी इंजीनियर नावेलकर ने वायरलेस से ट्रांसमीटर बनाया। 25 नवंबर 1954 से इस 'स्वतंत्रता की आवाज' ने कोंकणी और पुर्तगाली में प्रसारण प्रारंभ किया। छोटे ट्रांजिस्टर और रेडियो आसानी से उपलब्ध होने के कारण उनके संदेश गोवा के गांव-गांव में प्रसारित होने लगे। 'स्वतंत्रता की आवाज' गोवा के लोगों को गोवा की आजादी

के लिए किये जाने जाने वाले प्रयासों की जानकारी देती थी। रेडियो से समाचार देने वाले निडर लोगों में लिबिया लोबो सरदेसाई जैसी युवतियां भी थीं जिन्होंने अनेक संकटों और असुविधाओं के बावजूद रेडियो को चालू रखा। उन्होंने लोगों में गोवा की आजादी के प्रति चेतना जगायी।

दिवाली के दिन इस रेडियो ने खबर दी कि पुर्तगाली अफसर और धनवान लोग अपने बीवी-बच्चों को लिस्बन भेज रहे हैं।

''दीदी, क्या इसका यह अर्थ है कि पुर्तगालियों को लग रहा है कि भारत सरकार गोवा की आजादी के लिए सख्त कार्रवाई करने वाली है ?'' मोहन भाई ने सवाल किया।

''हो सकता है। उनको लग रहा है कि जनमत के दबाव के कारण भारत सरकार को गोवा की आजादी के लिए कुछ करना ही होगा।'' दीदी ने जवाब दिया।

''हां, करना ही होगा। बहुत सह लिया हमने,'' मोहन भाई बोला।

'' 'चालाक लोमड़ी' साहिबा की कोई खबर ?'' जोज़े ने पूछा।

''वह महाराष्ट्र या कर्नाटक में कहीं हैं। अभी हमें उनका दिवाली की शुभकामनाओं का पत्र मिला है,'' गोपू ने बताया।

''क्या पत्र पर दिनांक और डाकघर का ठप्पा नहीं है ?'' जोज़े ने पूछा।

''वह डाक से नहीं आया। एक स्वयंसेवक ने आकर दिया है,'' दीदी ने बताया।

''हे भगवान ! ये स्वयंसेवक भी कितने निडर और साहसी हैं !'' मोहन भाई ने सराहा।

''जो निडर होता है वही स्वतंत्रता सेनानी बन सकता है,'' जोज़े विश्वास से बोला।

''फिर तो तुम भी स्वतंत्रता सेनानी बन सकते हो, जोज़े,'' गोपू ने कहा।

''काश ! मैं बन सकता,'' जोज़े बोला।

''तुमने गणेश चतुर्थी के दिन मदद की थी,'' दीदी बोलीं।

''वह तो पुलिस को चकमा देने की मामूली बात थी। कोई शौर्य का

काम नहीं था। मैं तो चाहता हूं कि मुझे असली स्वतंत्रता सेनानी बनने का मौका मिले,'' जोज़े जैसे कोई सपना देखते हुए बोला।

''हो सकता है तुम्हें ऐसा मौका जल्दी ही मिल जाये,'' मोहन भाई ने चिढ़ाया।

और मौका मिला। जल्दी नहीं, पर थोड़े दिनों बाद।

दिसंबर की शाम जोज़े नाव में अपना खजाना देख रहा था कि उसे कुछ ऊंची-ऊंची आवाजें सुनायी दीं। वह खड़ा होकर देखने लगा कि शोर कैसा है। उसने देखा कि चार पुर्तगाली सैनिक उसकी नाव की तरफ आ रहे हैं। वह नीचे छिप गया। पिछले पंद्रह दिन से वातावरण तनावपूर्ण हो रहा था। पुर्तगाली सैनिक सड़कों पर घूम रहे थे। वे मछुआरों से सब अच्छी मछलियां ले लेते थे। मन हुआ तो अपनी मर्जी से पैसे देते थे। मछुआरे डर के मारे कुछ नहीं कह पाते। वे गांव के बाहर मछली बेचने भी नहीं जाते थे। रोज पुर्तगाली सैनिक और भारतीय फौज के बीच लड़ाई की अफवाहें उड़ रही थीं। लोग चाहते थे कि भारतीय फौज आये और उन्हें पुर्तगाली सत्ता से आजाद करे। वे बेताबी से इंतजार कर रहे थे।

जब 12 और 13 दिसंबर को भारतीय फौज की अपेक्षित कार्रवाई नहीं हुई तो लोग निराश हो गये। इस तरह की अपेक्षाएं 'स्वतंत्रता की आवाज' रेडियो सुनने वालों ने जगायी थीं। इसी तरह की खबरें सरकार की तरफ से भी मिल रही थीं। जोज़े, दीदी, मोहन भाई और गोपू, जो रोज रेडियो सुनते थे, उनको विश्वास था कि आजादी दूर नहीं है, फिर भी वे हर वक्त सावधान और होशियार रहते थे। इसलिए जब जोज़े ने चार पुर्तगाली सैनिकों को देखा तो उसे शक हुआ। वह जानना चाहता था कि उनका इरादा क्या है। यह तो अच्छा ही हुआ कि वे पुर्तगाली सैनिक आकर उसके खजाने वाली नाव के पास बैठ गये।

''मार्कोस, फ्रेडी, मुझे आदेश मिला है कि बोरी के पुल को उड़ाना है।''

''क्यों ?'' (नासिक) नाक से बोलने वाले आवाज वाले सैनिक ने पूछा।

''गुप्तचरों ने खबर दी है कि भारतीय फौज आ रही है। वे बेलगांव

जोज़े फुसफुसाया, "देख लेना बच्चू, मैं तुम्हारी योजना सफल नहीं होने दूंगा।"

से अंदर आयेंगे और मडगांव की तरफ बढ़ेंगे। दूसरी फौजी टुकड़ी उत्तर से आकर पणजी पर कब्ज़ा कर लेगी," रोबीली आवाज वाले सैनिक ने कहा। फिर आगे बोला, "बोरी के पुल को डायनामाइट लगाकर उड़ा दें तो मडगांव की तरफ बढ़ने वाली फौजी टुकड़ी को हम रोक सकेंगे।"

"भारतीय सैनिक बेवकूफ नहीं हैं। वे पुल का निरीक्षण करने के बाद ही पुल पार करेंगे," नासिक आवाज वाला सैनिक बोला।

"क्या मैं नहीं जानता ? जब भारतीय सैनिक निरीक्षण कर चुकेंगे, उसके बाद ही हम डायनामाइट लगायेंगे। समझा ?" यह उनके नेता की आवाज थी। "हमें उस स्थान की जानकारी भारतीयों से ज्यादा है। हम 17 की रात को डायनामाइट लगायेंगे, फिर हम पुल के दोनों तरफ भिन्न-भिन्न जगहों में छिप जायेंगे। तुम सब मछुआरों के वेश में आना। अपनी वर्दी मत पहनना। समझे ?"

"हां, जनाब। पर हम डायनामाइट उड़ायेंगे कब ?" रूखी आवाज वाले ने पूछा।

"जब भारतीय सैनिक पुल का निरीक्षण कर चुकेंगे, मैं तुम्हें इशारा करूंगा। उसके बाद तुम डायनामाइट जोड़ देना।" नेता ने जवाब दिया।

"एक बात और, बिलकुल कम रोशनी इस्तेमाल करोगे और आवाज बिलकुल नहीं।"

"जैसे ही भारतीय फौज की पहली टुकड़ी पुल पर आयेगी, हम डायनामाइट सुलगा देंगे," नेता ने आगे बताया।

"उस समय तक अधिकतर भारतीय सैनिक पुल पर आ चुके होंगे। तभी पुल उड़ेगा और भारतीय सैनिकों के हताहत शरीर चारों ओर बिखर जायेंगे," नासिक स्वर वाला बोला।

"एक तीर से दो शिकार, हा हा !" रूखी आवाज वाला हंसा।

उस क्रूर हंसी से जोज़े कांप उठा। उसे क्रोध आया। वह खड़ा होकर नाव से कूदकर उस पुर्तगाली सैनिक का गला घोंटना चाहता था।

"शायद कोई आ रहा है," नासिक आवाज वाला बोला। शायद उसने जोज़े की आवाज सुन ली थी।

जोज़े झट से नीचे छिप गया और फुसफुसाया, "देख लेना बच्चू, मैं

तुम्हारी योजना सफल नहीं होने दूंगा। मैं भारतीय सेना को बचाऊंगा। चाहे कुछ भी हो।" जोज़े ने मुट्ठियां भींचकर निश्चय किया। जब तक पुर्तगाली सैनिक बैठे रहे तब तक वह भी नाव में चुपचाप बैठा रहा। बीच-बीच में उचककर देखता रहा। थोड़ी देर बाद जब उनकी 'काजू फेणी' की बोतल खत्म हो गयी तो वे उठकर चल दिये।

"जॉन, हम अपनी-अपनी जगह कल रात दस बजे पहुंच जायेंगे," रूखी आवाज वाले सिपाही ने कहा।

जैसे ही पुर्तगाली सैनिक नजर से दूर हुए, जोज़े कूदकर नाव से बाहर आया। "यह बात दीदी को बतानी पड़ेगी," सोचकर जोज़े दीदी के घर की तरफ भागा।

दरवाजा बंद था। दरवाजा पीट-पीटकर "दीदी, जल्दी से दरवाजा खोलो" जोज़े हांफते हुए आवाज दे रहा था। दीदी ने दरवाजा खोला। उस समय जोज़े को देखकर दीदी हैरान हो गयीं। उन्हें लगा कहीं जोज़े के पिता को समुद्र में कुछ हुआ तो नहीं। "जोज़े, क्या हुआ ? घर में सब ठीक-ठाक तो है," दीदी ने पूछा।

"हां, माई और पाई ठीक हैं। ऐसी जगह चलो जहां कोई हमें सुन न सके। मुझे आपको कुछ गंभीर और गुप्त बात बतानी है।" जोज़े ने दीदी को लगभग घसीटते हुए कहा।

"चलो, मेरे पीछे।" दीदी जोज़े को अपने घर के बरामदे के कोने में ले गयीं। यह कोना घर के पीछे एक किनारे पर था। नारियल के पेड़ों और झाड़ियों के कारण वहां कोई नहीं आता था।

"अब बताओ, क्या बात है ?" दीदी ने कहा।

"दीदी, बोरी से मडगांव आने वाले भारतीय सैनिकों की जान खतरे में है।" जोज़े बोला।

"किस तरह ?" दीदी ने पूछा।

"पुर्तगाली सैनिक बोरी का पुल उड़ाने की योजना बना रहे हैं। जैसे ही भारतीय सैनिक उस पर से गुजरेंगे, वे पुल को उड़ा देंगे।" जोज़े ने बताया।

"तुम्हें कैसे पता लगा ? किसने बताया ?" दीदी ने पूछा।

"मैंने चार पुर्तगाली सैनिकों की समुद्र तट की निर्जन जगह पर ये बातें सुनीं।"

"तुम क्या कर रहे थे वहां ?" दीदी ने पूछा।

"मैं हमशा की तरह नाव में रखा अपना खजाना देख रहा था। वे वहां आकर योजना बना रहे थे, क्योंकि मेरे सिवा उस जगह कोई नहीं आता," जोज़े ने दीदी को बताया।

"मुझे पूरी बात बताओ।"

जोज़े ने चारों सैनिकों की बातों का पूरा विवरण दिया।

"क्या कर सकते हैं हम ?" दीदी ने पूछा।

"हमें ऐसी तरकीब ढूंढ़नी चाहिए जिससे हम कल आधी रात भारतीय फौज के पुल पार करने से पहले उन तक पहुंच जायें," जोज़े ने कहा।

दीदी सोचने लगीं। टेलीफोन करना ठीक नहीं था।

"हम किसी को मडगांव जाने के लिए कह सकते हैं," जोज़े ने सुझाव दिया।

"किसे ? ऐसा कोई विश्वसनीय आदमी मुझे नजर नहीं आता। दूसरा खतरा यह है कि वह अपने रिश्तेदारों या दोस्तों को बतायेगा जिससे पुर्तगाली सैनिक सजग हो जायेंगे।" दीदी ने आशंका प्रकट की।

"इसका मतलब हमें ही कुछ करना होगा," जोज़े बोला।

"हां, कल 'राया' जाने वाली बस में चलते हैं," दीदी बोलीं।

"उसके बाद हम क्या करेंगे ?" जोज़े ने जानना चाहा।

"हम पुल की अच्छी तरह से छानबीन करेंगे और इस बात का पता लगाने की कोशिश करेंगे कि वे कौन-सी जगह पर डायनामाइट लगा सकते हैं।" दीदी ने जवाब दिया।

"पहले हमें उनके छिपने की जगह का पता चलाना पड़ेगा।"

"एकदम ठीक कह रहे हो तुम," दीदी ने कहा। "अब भागो, तुम्हारे माई और पाई चिंता कर रहे होंगे। मैं सुबह 'राया' जाने के लिए तुम्हें लेने आऊंगी। ठीक से सोना। हमें दिन भर बहुत काम करना है।" दीदी ने जोज़े को पीठ थपथपाते हुए विदा किया।

दीदी ने जोज़े को तो ठीक से सोने के लिए कह दिया, पर खुद उन्हें

नींद नहीं आयी। वह इस काम के जोखिम के बारे में सोचती रहीं। उन्हें जोज़े की बहादुरी पर नाज हुआ। उसकी राष्ट्रभक्ति और भारतीय फौज को बचाने की उसकी प्रबल इच्छा पर उन्हें पूरा भरोसा था।

जोज़े की योग्यता के प्रति उन्हें कोई शंका नहीं थी। पर उन्हें पता नहीं चल रहा था कि कल मध्य रात्रि से पहले वे भारतीय फौज तक कैसे पहुंचेंगे ? रात भर बेचैन होकर वह करवटें बदलती रहीं...सुबह-सुबह उनकी आंख लगी।

आखिर आजादी मिल गयी

सुबह अपने साथ आशा और दृढ़ निश्चय लायी। दीदी जल्दी से तैयार होकर जोज़े के घर की ओर चल दीं। जोज़े रोज से भी जल्दी उठ गया था। वह तैयार होकर इधर से उधर चक्कर लगा रहा था। उसने अपने माता-पिता को बताया कि दीदी उसे अपने रिश्तेदारों के यहां ले जाने आ रही हैं। जैसे ही उसने दीदी को देखा, वह चिल्लाया, "माई, दीदी आ गयीं। मैं जा रहा हूं।"

"रुको तो ! मैंने दीदी और तुम्हारे लिए केक बनाया है। रास्ते में खा लेना।" मारिया केक की पोटली लायी। "माई, हमें कुछ नहीं चाहिए। तुम समझती क्यों नहीं ?" जोज़े बिगड़ा। वह तनाव महसूस कर रहा था।

"आज इतने नखरे क्यों कर रहे हो ? तुम्हें तो यात्रा में मुंह चलाना अच्छा लगता है। जब कार्निवाल से वापस आये थे, तब तुम्हीं ने तो कहा था," मारिया ने याद दिलाया।

"वह बात और थी। आज की यात्रा...," उसी समय दीदी पहुंचीं और पूछा, "जोज़े, तैयार हो ?"

"यह तो भोर से ही तैयार है, पर अब नखरे दिखा रहा है। मैंने आपकी यात्रा के लिए केक बांधकर दिया तो उसे भी ले जाने से इनकार कर रहा है," मारिया ने शिकायत की।

"कैसे ले जा सकते हैं, दीदी ? क्या हम यात्रा के दौरान कुछ खा पायेंगे, जबकि हम...।"

"जोज़े, माई से बहस मत करो। हमें रास्ते में भूख लगेगी।"

"मुझे दीजिए पोटली, मारिया। मैं अपने बैग में रखती हूं। हम लोग दो-तीन रोज में लौटेंगे। अगर एकाध दिन देर हो जाये तो चिंता मत करना," दीदी ने कहा।

जब वे जोज़े की झुग्गी से कुछ दूर निकल आये तो दीदी ने कहा, "जोज़े, तुम्हें सावधान रहना होगा। तुम तो माई को यही बताने लगे थे कि हम क्यों और कहां जा रहे हैं।"

"माफ करना, दीदी। मुझे चिढ़ हो रही थी क्योंकि माई हमें देर करवा रही थी।" जोज़े ने बताया।

"मैं समझती हूं, जोज़े। तुम तनाव में हो। पर हमें शांत रहकर सब करना होगा।"

"ठीक है, दीदी।"

जब वे बस अड्डे पहुंचे, तब साढ़े नौ बजे थे।

"हमें 10 बजे वाली बस मिलेगी। तुम यहीं खड़े रहो। मैं 'राया' जाने वाली बस का पता करती हूं," दीदी ने कहा।

बस समय पर चली। आधे घंटे में वे मडगांव पहुंचे। 10 मिनट रुकने के बाद बस 'राया' के लिए चल पड़ी। बीच में झटके से बस रुकी। दो मछुआरे बस के दरवाजे खटखटा रहे थे।

"दरवाजा खोला," रोबीले स्वर में एक चिल्लाया।

"यहां बस नहीं रुकती," कंडक्टर बोला।

"रोकनी होगी," दूसरा मछुआरा नासिक आवाज में बोला, और कंडक्टर को धक्का दिया। चार मछुआरे अंदर घुसे।

"दीदी," जोज़े ने कोहनी मारी।"

"क्या है, जोज़े ?"

"मुझे लगता है ये वही हैं।"

"पक्का ?"

"अवइगे (ओ मां)," पीछे से आवाज आयी। सब लोग मुड़कर आवाज की ओर देखने लगे। उनमें से एक ढीठ मछुआरे ने यात्री को उसकी जगह से धकेला था।

"अवइगे," उनमें से एक ने यात्री की नकल की।

"हा....हा....," उसका साथी हंसा।

"दीदी, अब मुझे पक्का विश्वास हो गया। यह वही रूखी हंसी है," जोज़े फुसफुसाया।

"सैनिकों ने अपनी वर्दी तो छोड़ दी, पर अपना गरूर नहीं छोड़ पाये," दीदी ने कहा।

"कोई विरोध क्यों नहीं करता ?" जोज़े ने पूछा।

"क्योंकि कोई भी गुंडों से उलझना नहीं चाहता। और खासकर इन दिनों।"

"मुझे पता है। आजकल पुर्तगाली पुलिस लोगों की पिटाई कर रही है," जोज़े बुदबुदाया।

"ज्यादा कानाफूसी नहीं करते। वरना उन्हें शक होगा," दीदी ने सावधान किया।

"बोलने के बजाय केक खाते हैं," जोज़े ने सुझाया।

"नहीं, नहीं। कैसे खा सकते हैं ? हमें तो खाने की इच्छा नहीं होगी। क्यों ठीक है ना ?" दीदी ने चिढ़ाया।

"ओ दीदी ! मजाक मत उड़ाइये," कहकर जोज़े ने दीदी के बैग से केक की पोटली निकाली।

वे दोपहर बाद राया पहुंचे। छोटे से होटल में खाना खाने के बाद वे बोरी के पुल के पास पहुंचे। पुल के पास पहुंचने पर उन्होंने देखा कि कई पुलिस वाले पुल की रक्षा कर रहे थे। किसी को पुल पार नहीं करने दे रहे थे। नावों को भी नदी पार करने की इजाजत नहीं थी। दूसरी ओर तैनात भारतीय फौज को संदेशा पहुंचाने की समस्या कठिन लग रही थी। जोज़े ने तुरंत तरकीब सोची। उसने दीदी से कहा, "मैं अच्छा तैराक हूं। मैं सूरज ढलने के बाद तैरकर उस पार पहुंच जाऊंगा।"

दीदी राजी नहीं हुई। जोज़े ने पूछा, "आपकी सुनाई देशभक्ति की कहानियों का क्या लाभ, अगर मैं अपनी मातृभूमि के लिए इतना भी न करूं ?"

दीदी के पास जवाब नहीं था। वह दुविधा में पड़ गयीं। उन्हें खतरे का अंदाजा था पर उन्होंने खुद ही तो उसे और अन्य बच्चों को साहसी

बनने को कहकर उनमें देशभक्ति जगायी थी। दूसरा अन्य उपाय भी नहीं था। जोज़े जानता था कि दीदी उसे बहुत प्यार करती थीं और उसे खतरे से दूर रखना चाहती थीं। जोज़े ने दीदी को आश्वस्त करने के लिए कहा, "चिंता मत कीजिए। मैं पार कर सकूंगा।"

"मुझे पता है तुम कर सकोगे। पर नदी पार करने से पहले हमें उन स्थानों का पता करना होगा, जहां वे डायनामाइट लगा सकते हैं।" दीदी ने सुझाया।

"पर दीदी, पहरेदार सब तरफ हैं। अगर उन्होंने हमें जासूसी करते देखा तो गोली मार देंगे। हमें उन जगहों का पता उनकी नजर बचाकर करना होगा," जोज़े ने कहा।

"ठहरो, तुम नहीं जा सकते," पहरेदार ने आदेश दिया।

"बेवकूफ। हमें पहचानते नहीं। हम मछुआरे नहीं हैं। हम हैं खास काम के लिए तैनात पुर्तगाली सैनिक," रूखी आवाज वाले ने कहा।

दीदी और जोज़े पुल की एक ओर की झाड़ी के पीछे छिप गये।

"नहीं। हमें कोई आदेश या संदेश नहीं मिला आपको जाने देने का," पहरेदार ने कहा।

"हम पर विश्वास नहीं है तुम्हें ? मैं इंस्पेक्टर जॉन रोड्रिग्स हूं। मैं आदेश देता हूं कि हमें जाने दो।"

"नहीं। हम नहीं जाने देंगे।" दोनों पक्षों में बहस होने लगी। दूसरी तरफ के पहरेदार भी अपने साथियों को बचाने आये।

"जोज़े, यही मौका है। चलो, जल्दी से नीचे चलें ताकि हम उन जगहों को खोजें जहां ये लोग डायनामाइट लगा सकते हैं।" दीदी और जोज़े सावधानी से सीढ़ियों से उतरकर पुल के नीचे आये। वहां घनी झाड़ियां और काजू के पेड़ थे।

"दीदी, अगर हम यहां छिपे रहें तो हम पुल के दोनों ओर देख पायेंगे," जोज़े ने जगह साफ करते हुए कहा।

"बेगिन यो (जल्दी आओ)," रोबीली आवाज वाला चिल्लाया। उन्होंने मछुआरे के वेश में चार पुर्तगाली सिपाहियों को नीचे आते हुए देखा।

"मुझे लगता है कि हम चार-चार डायनामाइट पुल के दोनों तरफ

उन्होंने देखा कि कई पुलिस वाले पुल की रक्षा कर रहे थे

और चार बीच में लगायेंगे,'' नासिक स्वर वाला सिपाही बोला।

उन्होंने अपना काम फटाफट कर लिया।

''खास मिशन समाप्त। चलो अब काजू फेणी हो जाये।'' रूखी आवाज वाले ने अपनी कमर में छिपाई बोतल निकाली।

''नहीं, नहीं, यहां नहीं। रेस्तरां में चलें,'' नासिक स्वर वाला बोला।

''डायनामाइटों की रक्षा कौन करेगा ?'' रोबीली आवाज वाले ने पूछा।

''किसी की जरूरत नहीं। पुल के पहरेदार किसी को यहां फटकने तक नहीं देते,'' रूखी आवाज वाला बोला।

वे ऊपर निकल गये।

''जोज़े, हमें अंधेरा होने तक रुकना होगा। बाद में ही तुम तैरकर उस पार जा सकोगे।'' दीदी ने धीरे से कहा।

''हम इंतजार करेंगे। हमने भरपेट खाना खाया है।'' जोज़े ने कहा। ''मेरे बैग की पोटली में कुछ केक बचा है।''

वे चुपचाप बैठे रहे। जैसे ही शाम हुई, पुल के पहरेदारों ने टार्च से प्रकाश डालकर पहरा देना प्रारंभ किया। अंधेरे-उजाले के खेल से वातावरण डरावना लगने लगा।

दीदी ने अपने पर्स से छोटा टार्च निकालकर घड़ी देखी। ''क्या समय हुआ है, दीदी ?'' जोज़े ने पूछा।

''7.30 हुए हैं।''

''दीदी, हमें अब नदी के पास जाना चाहिए।'' अगर मैं अभी नहीं निकला तो उस पार देर से पहुंचूंगा।

''कितनी देर लगेगी जोज़े ?'' दीदी की आवाज कांप रही थी।

''इतनी चिंता मत करो, दीदी। मुझे कुछ नहीं होगा। अगर बाधाएं नहीं आयीं तो मैं एक घंटे में पहुंच जाऊंगा,'' जोज़े ने बताया।

''इसका मतलब तुम नौ बजे के आसपास पहुंचोगे। फौजी टुकड़ियों को डायनामाइट नाकाम करने में भी समय लगेगा।''

''इसलिए तो कह रहा हूं कि मुझे अभी जाना होगा ताकि आधी रात से पहले सारा काम पूरा हो सके,'' जोज़े बोला।

''ठीक है, जोज़े,'' दीदी ने कहा।

उन्होंने चारों तरफ देखा। फिर धीरे से बाहर आये और नदी की तरफ चल पड़े। पहरेदारों की मशालों की प्रकाश किरणें उन्हें मदद पहुंचा रही थीं।

"अवइगे।" दीदी अचानक लड़खड़ायीं और तब फौरन हाथ से मुंह बंद कर लिया।

"कौन है ?" पहरेदार ने पूछा। चारों तरफ से प्रकाश किरणें पड़ने लगीं। दीदी और जोज़े पेट के बल जमीन पर लेट गये।

थोड़ी देर बाद जब फिर सब शांत हुआ, वे सावधानी से उठे।

"मुझे क्षमा करो, जोज़े," दीदी बुदबुदायीं।

"कोई बात नहीं। आपको चोट तो नहीं आयी।"

'नहीं। मुझे कुछ नहीं हुआ। मैं ठीक से चल सकती हूं। चलो, जल्दी करो।" दोनों नदी किनारे घूमे और ऐसी जगह खोजने लगे जहां से वह नदी में प्रवेश कर सके। आखिर में उन्होंने ऐसी जगह चुन ली जहां नदी के दोनों छोरों का अंतर सबसे कम था। "दीदी, तुम राया वापस जाकर उसी रेस्तरां में मेरी प्रतीक्षा करना," जोज़े ने सुझाया।

"अपना खयाल रखना, जोज़े। अगर तुम्हें कुछ...।"

"कुछ नहीं होगा मुझे। भारतीय फौज पहुंच चुकी है। आप चिंता मत कीजिये। याद रखिये, हम चालाक लोमड़ी के साहसी सिपाही हैं और मैं तो चालाक छोटी लोमड़ी हूं।" जोज़े ने गर्व से कहा।

"ओ, जोज़े। मुझे तुम पर नाज है," दीदी ने जोज़े को गले लगाया। "ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।"

"तथास्तु," जोज़े ने कहा और बड़ी कुशलता से कम से कम आवाज करते हुए पानी में प्रवेश कर गया। पर रात के सन्नाटे में उतनी आवाज भी पहरेदारों का ध्यान आकर्षित करने के लिए काफी थी।

"कौन जा रहा है उधर ?" पुल से डरावनी आवाज ने पूछा। दीदी डर से कांप उठीं। पर खतरे की आशंका से पेड़ के पीछे छिप गयीं। जोज़े को तैराकी के सब दावपेंच मालूम थे। वह हाथ-पैर हिलाए बिना पानी पर तैरता रहा ताकि पानी में हलचल न हो और पहरेदार उसे देख न सकें। जब शांति हुई तब दीदी अपने बहादुर जोज़े के लिए प्रार्थना करने चली गयीं।

"कौन जा रहा है उधर ?" पुल से डरावनी आवाज ने पूछा

जोज़े तैरता गया, तैरता गया। लगता था कि कोई अंत ही नहीं है। तैरते-तैरते जब थक जाता तो पानी पर स्थिर तैरने लगता। जब थकान कम होती तो फिर से तैरने लगता। वह बीच नदी में था कि पहरेदार की मशाल की रोशनी उस पर पड़ी।

"नदी में कोई है," पहरेदार चिल्लाया।

कई मशालें जल उठीं। जल्दी से जोज़े ने लंबी सांस ली और डुबकी लगाकर पानी के अंदर चला गया। "कहां है, कहां है ?" उसे कई आवाजें सुनायी दीं। वह अपनी सारी कुशलता से और सांस रोककर पानी के अंदर चुपचाप तैरता रहा।

"नहीं, कोई नहीं है। अपनी-अपनी जगह जाओ।" मुख्य पहरेदार ने आदेश दिया। जोज़े ने ऊपर आकर सांस ली और फिर पानी के नीचे तैरता गया। इसी तरह से वह कुछ देर तैरता रहा। इससे थकावट ज्यादा होती थी पर और कोई चारा नहीं था। दूसरा किनारा नजर आया तो उसे लगा जैसे वह रात भर तैरता रहा हो, पर जोजे सही समय पर पहुंच गया था। दूसरे किनारे पर पहुंचकर वह चुपके से भारतीय सैनिकों की तरफ बढ़ा। वे कूच करने के लिए तैयार खड़े थे और आदेश का इंतजार कर रहे थे।

उसे पता नहीं लग रहा था कि वह किससे कहे।

वह चिल्लाया, "रावरे, रावरे (ठहरो, ठहरो), पुल की तरफ मत जाना। पुल में डायनामाइट लगा है।" पर उसकी आवाज सैनिकों ने सुनी नहीं क्योंकि तैरने से वह काफी थक चुका था और उसकी आवाज कमजोर पड़ गयी थी।

जब कोई जवाब नहीं मिला तो वह फिर चिल्लाया, "स्टॉप, डोंट गो, ब्रिज विल फट।" इससे अच्छी अंग्रेजी वह बोल नहीं पा रहा था, और जाकर फौज के सामने खड़ा हो गया।

जब वह उनके सामने आया तो भारतीय सैनिक केवल लंगोट पहने हुए नौ-दस साल के लड़के को देखकर, जिसके बदन से पानी टपक रहा था, हैरान रह गये। वह चिल्ला रहा था, पर 63वीं टुकड़ी के सैनिक उसकी बात समझ नहीं पा रहे थे। फिर जोज़े कोंकणी में चिल्लाया, "ठहरो, मत जाओ।"

भाग्य से हवलदार राणे कोंकणी जानते थे, वह समझ गये। उन्होंने

जोज़े से उन्हें रोकने का कारण पूछा।

जोज़े ने उन्हें पूरी बात बतायी कि कैसे उसने पुर्तगाली सिपाहियों की योजना सुनी और उन्हें पुल के नीचे डायनामाइट लगाते हुए भी देखा था।

हवलदार राणे जोज़े को कमांडर ले. कर्नल नंदा के पास ले गये और जोज़े की कही बात बतायी। ले. कर्नल को जोज़े की बात पर विश्वास नहीं हुआ क्योंकि भारतीय सैनिक तोड़-फोड़ की आशंका दूर करने हेतु पुल का निरीक्षण कर चुके थे। जोज़े ने बताया कि कैसे उसने पुर्तगाली सैनिक को वह आदेश देते हुए सुना है कि वे भारतीय सैनिकों के निरीक्षण करके चले जाने के बाद ही डायनामाइट लगायें।

"आप मेरे साथ अपने सैनिक भेजिये। मैं वह स्थान दिखाता हूं जहां पुर्तगाली सिपाही डायनामाइट की तारें जोड़ रहे होंगे," जाज़े ने विनती की।

"जनाब, दुबारा निरीक्षण करने में कोई हर्ज नहीं है ?" हवलदार राणे ने सुझाया। अन्य अफसरों ने भी उनका साथ दिया।

अंत में ले. कर्नल नंदा मान गये। उन्होंने भारतीय कमांडो को जोज़े के साथ जाने के लिए कहा।

"अगर पुर्तगाली सैनिक नजर आयें तो उनसे निपट लेना और अपना काम समाप्त कर हमें इशारा कर देना," कमांडर ने आदेश दिया।

जोज़े स्थान से परिचित था। वह भारतीय सैनिकों को उस स्थान पर ले गया, जहां पुर्तगाली सैनिकों ने डायनामाइट लगाये थे।

"वहां देखो।" जोज़े ने मछुआरों के वेश में पुर्तगाली सैनिकों की तरफ इशारा किया जो डायनामाइट की तारें लगा रहे थे। जब उन्होंने भारतीय सैनिकों को आते हुए देखा तो उन्होंने डायनामाइट सुलगा दिये और भाग गये। पुल उड़ गया। सौभाग्य से भारतीय सेना का कोई सैनिक हताहत नहीं हुआ।

लेकिन अब नदी पार करने की समस्या आ खड़ी हुई। जब ले. कर्नल नंदा और बटालियन को पता लगा कि नदी 546 मीटर चौड़ी है तो उन्होंने भारतीय सेना को बचाने के लिए उसे पार करके आने वाले जोज़े के साहस और ताकत की सराहना की। उन्होंने उसे शाबासी दी। राणे ने उसे कंधे पर उठा लिया।

"हमें जल्दी से नदी पार करने का उपाय खोजना होगा। अगर कुछ 'बार्ज' मिल जायें तो समस्या दूर हो जायेगी," कमांडर ने कहा।

"बार्ज मरे। हान सांगतालो (आपको बार्ज चाहिए न)। मैं बताता हूं कैसे मिलेंगे।" जोज़े ने हवलदार राणे से कहा। जोज़े उन्हें गांव के लोगों के पास ले गया। लोगों ने फौज का स्वागत किया। वे उन्हें बार्ज की कंपनी के मालिक के पास ले गये। बार्ज मिलने पर पूरी फौज जोज़े के साथ नदी पार कर गयी।

मडगांव और अन्य गांवों के लोग उनके स्वागत के लिए राया के पास नदी किनारे जमा हुए थे। उन्होंने फौज को मडगांव की तरफ बढ़ने के लिए ट्रक और कारें दीं।

"जोज़े, जोज़े," उसने दीदी की आवाज सुनी। वह चारों ओर जमा भीड़ में से उसके पास पहुंचने की कोशिश कर रही थीं।

"कृपया रुकिये। मेरी दीदी वहां है, रुकिये।" जोज़े ने विनती की।

जैसे ही ट्रक रुका, जोज़े कूदा और भीड़ में घुसकर दीदी तक पहुंच उनसे लिपट गया।

"दीदी, दीदी, मैंने कर दिया। मैंने कहा था ना मैं कर सकता हूं।"

"हां, मेरी चालाक छोटी लोमड़ी, मुझे तुम पर गर्व है।" दीदी का गला भर आया।

"वाकई, यह बहादुर लड़का है," ले. कर्नल नंदा ने कहा जो जोज़े के पीछे आये थे। "कृपया आप हमारे साथ शहर चलिये।" दीदी मान गयीं। वे सब ट्रक में चढ़ गये। उनका कारवां दोपहर मडगांव पहुंचा। लोग भारतीय फौज का स्वागत करने सड़कों पर उमड़ पड़े थे। "भारत माता की जय", "जय हिंद", "गोवा की आजादी अमर रहे" के नारों से आकाश गूंज उठा। फौज कछुए की गति से बढ़ रही थी।

"वह देखो, साहिबा। वहां है दीदी। साहिबा, साहिबा," जोज़े चिल्लाया। उन्होंने सुना और वह ट्रक के पास आये।

"तुम दोनों यहां क्या कर रहे हो ?" उन्होंने पूछा।

"ये न होते तो हम आज जिंदा न होते," हवलदार राणे ने कहा। दीदी ने फिर अपने मिशन के बारे में बताया और तब मंगेश पै को

ले. कर्नल नंदा से मिलाया।

"कर्नल, मैं आपको खुशखबरी देना चाहता हूं। 'आपरेशन विजय'

जब वे लोहिया मैदान पहुंचे, तब भीड़ इतनी बढ़ गयी थी कि कोई भी जगह खाली नहीं बची थी

योजना के अनुसार सफल हो चुका है। भारतीय हवाई सेना ने दाबोलिम के हवाई अड्डे पर बम गिराकर उसे बेकार कर दिया है। एयर वाइस मार्शल पिंटो नाश्ते के लिए बेलगांव लौट गये हैं।''

''और फौजी टुकड़ियों की कोई खबर है ?'' ले. कर्नल नंदा ने पूछा।

''स्वतंत्रता की आवाज रेडियो ने खबर दी है कि पुर्तगालियों के पुलों के उड़ाने के बावजूद दूसरी सिख लाइट इनफैंट्री और पैरा पंजाब ब्रिगेड्स अलग-अलग तरफ से पणजी पहुंच गयी हैं। आगवाद के किले पर योजनानुसार भारतीय फौज ने कब्जा कर लिया है। पणजी के अपने आफिस से गवर्नर भाग गये हैं और अब भारतीय फौज ने उस पर अपना नियंत्रण कर लिया है।'' साहिबा ने खबर दी।

''विधिवत आत्मसमर्पण हुआ कि नहीं ?'' ले. कर्नल नंदा ने पूछा।

''वह भी हो ही गया। उन्होंने एक बैरक में छिपे गवर्नर को ढूंढ़ निकाला। उन्होंने आत्मसमर्पण के कागजात पर हस्ताक्षर कर दिए।'' साहिबा ने बताया।

''भारतीय फौज जिंदाबाद।'' साहिबा ने कहा। फौजियों ने ''जय हिंद'', ''जय भारतीय जवान'', ''भारत माता की जय'' के नारे लगाये। लोगों ने उनका साथ दिया। हवलदार राणे ने कहा, ''हमें 'जय जोज़े' भी कहना चाहिए।''

''बिलकुल,'' ले. कर्नल नंदा ने सहमति दी। साहिबा ने भी 'हां' कहा।

साहिबा ने जोज़े को कंधे पर बिठाया। लोगों ने ''जोज़े जिंदाबाद'' का नारा लगाया। आकाश ''जोज़े जिंदाबाद'' के नारों से गूंजने लगा।

''नहीं, नहीं, जोज़े नहीं, ''भारत माता जिंदाबाद'', ''भारतीय फौज जिंदाबाद'', जोज़े चिल्लाया। जब वे लोहिया मैदान पहुंचे, तब भीड़ इतनी बढ़ गयी थी कि कोई भी जगह खाली नहीं बची थी।

जब ले. कर्नल नंदा ने तिरंगा फहराया, आत्मसमर्पण किये पुर्तगाली सैनिक भी ''जय हिंद'' के नारों में शामिल हो गये। गोवा के लोगों का आजादी का सपना पूरा हुआ और 19 दिसंबर 1961 को भारत की आजादी संपूर्ण हुई।

मुद्रकः सरस्वती प्रिंटर्स, बी—71, फेस—II, ओखला ईण्डस्ट्रीयल एरिया, नई दिल्ली।